सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

रिश्तों की पाठशाला वहीं चलती है...!
जहां राजनीति और गणित के विषय नहीं होते...!!
अज्ञात...

वर्ष–01 अंक–48 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, सोमवार 09 मार्च 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए,

भ्रष्टाचार की 'जेट' रफ्तार : राजनांदगांव आबकारी विभाग ने एक दिन में जारी किया था बार लाइसेंस

नरेन्द्र डाकलिया / राजनांदगांव

जिले के आबकारी विभाग की कार्यप्रणाली एक बार फिर गंभीर सवालों के घेरे में है। आरोप है कि विभाग ने नियमों और निर्धारित प्रक्रिया को दरकिनार करते हुए इतनी तेजी से होटल बार का लाइसेंस जारी किया था कि पूरी प्रक्रिया पर ही संदेह खड़ा हो गया है। शिकायतकर्ता अभय कोटडिया ने पूरे मामले को गंभीर अनियमितता बताते हुए उच्च स्तरीय जांच की मांग की है।

एक ही दिन में आवेदन, स्वीकृति और लाइसेंस जारी

प्राप्त दस्तावेजों के अनुसार होटल राजदूत बार के नाम से आबकारी लाइसेंस 31 मार्च 2025 को आवेदन किया गया और उसी दिन लाइसेंस भी जारी कर दिया

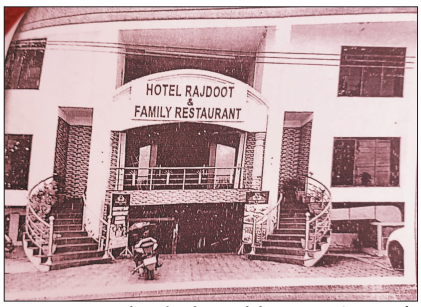

गया। सामान्यतः बार लाइसेंस जारी करने से पहले कई स्तरों पर जांच, निरीक्षण और दस्तावेजों का सत्यापन किया जाता है, लेकिन इस मामले में पूरी प्रक्रिया एक ही दिन में पूरी होने से प्रशासनिक पारदर्शिता पर गंभीर प्रश्न उठ रहे हैं।

दस्तावेजों में नाम का बड़ा खेल

दस्तावेजों के अवलोकन में यह भी सामने आया है कि लाइसेंस होटल राजदूत बार के नाम से जारी हुआ, जबकि लाइसेंस प्रक्रिया में प्रस्तुत कई आवश्यक दस्तावेज राजदूत रेसिडेंसी बार एंड रेस्टोरेंट के नाम से पहले की तारीखों में तैयार किए गए बताए जा रहे हैं। इससे यह सवाल उठ रहा है कि जब आवेदन और सहायक दस्तावेज एक अलग नाम से हैं तो लाइसेंस दूसरे नाम से कैसे जारी कर दिया गया।

आवश्यक दस्तावेजों पर भी सवाल

मामले में यह भी आरोप लगाया गया है कि लाइसेंस जारी करने से पहले जिन अनिवार्य प्रमाणपत्रों का परीक्षण आवश्यक होता है, उनमें कई दस्तावेज या तो अलग नाम से हैं या उनकी जांच ठीक से नहीं की गई। इनमें मुख्य रूप से शामिल बताए जा रहे हैं: पैन कार्ड और जीएसटी से जुड़े दस्तावेज, खाद्य सुरक्षा (फूड लाइसेंस), गुमास्ता / व्यापार लाइसेंस, फायर सेफ्टी अनुमति, पेन कार्ड और जीएसटी नम्बर भी गड़बड़ झाला, स्थल निरीक्षण और आबकारी निरीक्षक की रिपोर्ट, आरोप है कि इन दस्तावेजों का वास्तविक सत्यापन किए बिना ही लाइसेंस जारी कर दिया गया।

शपथ पत्र और वास्तविक स्थिति पर संदेह

संलग्न दस्तावेजों में प्रस्तुत शपथ पत्रों को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। आरोप है कि जमीन विवाद और भवन की जरजर वास्तविक स्थिति को छुपाते हुए शपथ पत्र दिए गए, लेकिन विभाग ने किसी प्रकार का भौतिक सत्यापन करना आवश्यक नहीं समझा।

अंधा कानून या नियमों की अनदेखी?

स्थानीय स्तर पर यह चर्चा भी तेज हो गई है कि यदि आवेदन और दस्तावेज एक नाम से हैं और लाइसेंस दूसरे नाम से जारी किया गया है, तो यह आबकारी नियमों के विरुद्ध गंभीर प्रशासनिक अनियमितता हो सकती है। जानकारों का कहना है कि इस प्रकार की प्रक्रिया से यह सवाल उठता है कि क्या नियमों का पालन हुआ या उन्हें जानबूझकर नजरअंदाज किया गया।

उच्च स्तरीय जांच की मांग

शिकायतकर्ता अभय कोटडिया ने पूरे मामले को संदिग्ध बताते हुए इसकी उच्च स्तरीय स्वतंत्र जांच की मांग की है। उनका कहना है कि मामले की जांच आर्थिक अपराध अन्वेषण इकाई (EOW), लोकायुक्त या अन्य सक्षम एजेंसी से कराई जानी चाहिए ताकि यह स्पष्ट हो सके कि लाइसेंस जारी करने की प्रक्रिया में कहीं भ्रष्टाचार, नियमों की अनदेखी या फर्जी दस्तावेजों का उपयोग तो नहीं हुआ। उन्होंने मांग की है कि यदि जांच में अनियमितता सामने आती है तो संबंधित अधिकारियों और लाभार्थियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो सके।

निशांत कुमार की राजनीति में एंट्री और देश में परिवारवाद की नई बहस

आलोक तिवारी / पटना

बिहार की राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब निशांत कुमार ने औपचारिक रूप से राजनीतिक पटल पर कदम रख दिया। इसके साथ ही लंबे समय तक राज्य की राजनीति के केंद्रीय चेहरे रहे नीतीश कुमार की सक्रिय सत्ता राजनीति से एक प्रकार की सम्मानजनक विदाई का संकेत भी दिखाई देने लगा। लेकिन इस घटनाक्रम ने केवल नेतृत्व परिवर्तन की चर्चा ही नहीं छेड़ी, बल्कि देश की राजनीति में लंबे समय से चल रही परिवारवाद की बहस को भी फिर से केंद्र में ला दिया है।

परिवारवाद की बहस और भाजपा की असहजता : बिहार में वर्षों तक लालू प्रसाद यादव और उनके परिवार पर परिवारवाद की राजनीति करने का आरोप लगाया जाता रहा है। भारतीय जनता पार्टी ने भी अक्सर इस मुद्दे को राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बनाया और इसे लोकतंत्र के लिए नुकसानदेह बताया। लेकिन जब नीतीश कुमार के पुत्र निशांत कुमार की राजनीति में एंट्री की चर्चा सामने आई, तब राजनीतिक हलकों में यह सवाल भी उठने लगा कि क्या परिवारवाद केवल विरोधियों तक सीमित मुद्दा है या यह भारतीय राजनीति की व्यापक सच्चाई बन चुका है। यही कारण है कि इस घटनाक्रम ने भाजपा और उसके नेतृत्व, विशेषकर नरेंद्र मोदी के सामने भी एक नई बहस खड़ी कर दी है।

भारतीय राजनीति में परिवारवाद की परंपरा : भारतीय राजनीति में परिवारवाद कोई नया विषय नहीं है। राष्ट्रीय स्तर पर जवाहरलाल नेहरू से लेकर इंदिरा गांधी और आगे चलकर राहुल गांधी तक कांग्रेस की राजनीति पर परिवारवाद का आरोप लगता रहा है। इसी तरह बिहार में लालू प्रसाद यादव के परिवार की राजनीति भी अक्सर चर्चा में रहती है, जहां तेजस्वी यादव और उनके अन्य परिजन सक्रिय राजनीति में हैं। लेकिन यह प्रवृत्ति केवल कांग्रेस या क्षेत्रीय दलों तक सीमित नहीं रही। देश के विभिन्न राज्यों में कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहां अलग-अलग दलों के नेताओं के परिजन राजनीति में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। यही कारण है कि अब परिवारवाद को केवल किसी एक दल की समस्या कहना वास्तविकता से दूर माना जाता है।

लोकतंत्र और वंशानुगत राजनीति का प्रश्न : परिवारवाद की राजनीति पर बहस का मूल प्रश्न यही है कि क्या लोकतंत्र में राजनीतिक अवसर केवल कुछ परिवारों तक सीमित हो जाने चाहिए। आलोचकों का तर्क है कि इससे नई प्रतिभाओं के लिए राजनीति में जगह बनाना कठिन हो जाता है। दूसरी ओर कुछ लोग यह भी तर्क देते हैं कि लोकतंत्र में अंतिम निर्णय जनता के हाथ में होता है। यदि जनता किसी राजनीतिक परिवार के सदस्य को स्वीकार करती है और उसे जनादेश देती है, तो उसे केवल परिवार के आधार पर अस्वीकार करना भी उचित नहीं माना जा सकता।

बिहार की राजनीति में नया अध्याय : निशांत कुमार की संभावित सक्रियता को बिहार की राजनीति में एक नए अध्याय के रूप में देखा जा रहा है। नीतीश कुमार ने लंबे समय तक राज्य की राजनीति को प्रभावित किया है और उनके बाद नेतृत्व की दिशा क्या होगी, यह प्रश्न पहले से ही चर्चा में रहा है। अब जब उनका परिवार भी राजनीतिक रूप से सक्रिय होता दिखाई दे रहा है, तो यह बहस और तेज हो गई है कि क्या बिहार की राजनीति भी उसी रास्ते पर बढ़ रही है जिसे अक्सर परिवारवादी राजनीति कहा जाता है। निशांत कुमार की एंट्री ने केवल बिहार की सत्ता राजनीति में बदलाव का संकेत नहीं दिया है, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की उस स्थायी बहस को भी फिर से जीवित कर दिया है जिसमें परिवारवाद बनाम राजनीतिक अवसर की समानता का सवाल शामिल है। सच्चाई यह है कि आज भारतीय राजनीति में परिवारवाद एक व्यापक वास्तविकता बन चुका है। चाहे राष्ट्रीय दल हों या क्षेत्रीय, लगभग हर दल में इसके उदाहरण मिल जाते हैं। ऐसे में सवाल केवल किसी एक दल या नेता का नहीं, बल्कि उस राजनीतिक संस्कृति का है जो समय के साथ विकसित हुई है और जिसे बदलना आसान नहीं दिखाई देता।

भारत बना टी-20 क्रिकेट का बादशाह

तीसरी बार आईसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप जीतकर रचा इतिहास

नई दृष्टिबिंदु / अहमदाबाद

विश्व क्रिकेट में एक नया इतिहास रचते हुए भारत राष्ट्रीय क्रिकेट टीम ने आईसीसी पुरुष टी-20 विश्व कप 2026 का खिताब जीत लिया। फाइनल मुकाबले में भारत ने न्यूजीलैंड राष्ट्रीय क्रिकेट टीम को करारी शिकस्त देकर विश्व क्रिकेट में अपना परचम लहरा दिया। यह ऐतिहासिक जीत दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम नरेंद्र मोदी स्टेडियम में हासिल हुई, जहां हजारों दर्शकों ने भारत की इस ऐतिहासिक जीत का गवाह बनकर जश्न मनाया।

भारत ने बनाया नया विश्व रिकॉर्ड

इस जीत के साथ भारत टी-20 क्रिकेट इतिहास की पहली टीम बन गई जिसने तीन बार टी-20 विश्व कप जीतने का कारनामा किया। इससे पहले भारत ने 2007 में पहला टी-20 विश्व कप जीता था और इसके बाद एक और खिताब अपने नाम किया था। अब तीसरी बार ट्रॉफी जीतकर भारतीय टीम ने विश्व क्रिकेट में अपना दबदबा साबित कर दिया है।

बल्लेबाजों ने रखी जीत की मजबूत नींव

फाइनल मुकाबले में भारतीय बल्लेबाजों ने आक्रामक और आत्मविश्वास से भरी बल्लेबाजी का प्रदर्शन किया। शुरुआत से ही टीम ने न्यूजीलैंड के गेंदबाजों पर दबाव बना दिया और बड़े स्कोर की मजबूत नींव रखी। भारतीय बल्लेबाजों की तेज पारी और लगातार चौके-छक्कों ने स्टेडियम में मौजूद दर्शकों को रोमांच से भर दिया। पूरी पारी के दौरान भारतीय टीम ने मैच पर अपना नियंत्रण बनाए रखा।

गेंदबाजों का शानदार प्रदर्शन

लक्ष्य का पीछा करने उतरी न्यूजीलैंड की टीम भारतीय गेंदबाजों के सामने टिक नहीं पाई। भारतीय तेज गेंदबाजों और स्पिनरों ने अनुशासित गेंदबाजी करते हुए लगातार विकेट झटके और न्यूजीलैंड की बल्लेबाजी को पूरी तरह दबाव में डाल दिया। तेज गेंदबाजी आक्रमण और स्पिन गेंदबाजों के संयोजन ने मैच को पूरी तरह भारत के पक्ष में कर दिया।

अहमदाबाद में जश्न का माहौल

फाइनल जीतते ही अहमदाबाद का नरेंद्र मोदी स्टेडियम 'भारत माता की जय' और 'इंडिया-इंडिया' के नारों से गूंज उठा। स्टेडियम में मौजूद दर्शकों ने झंडे लहराकर और आतिशबाजी कर टीम इंडिया की ऐतिहासिक जीत का जश्न मनाया।

देशभर में खुशी की लहर

भारत की इस जीत के बाद पूरे देश में उत्सव का माहौल बन गया। शहर-शहर और गांव-गांव में क्रिकेट प्रेमियों ने पटाखे जलाकर और मिठाइयां बांटकर अपनी खुशी जाहिर की। यह जीत केवल एक ट्रॉफी नहीं बल्कि भारतीय क्रिकेट के स्वर्णिम इतिहास में एक और गौरवपूर्ण अध्याय बन गई है।

नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा

टी-20 विश्व कप 2026 की यह जीत आने वाली पीढ़ियों के खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा बनेगी। भारतीय टीम ने एक बार फिर साबित कर दिया कि प्रतिभा, रणनीति और आत्मविश्वास के दम पर विश्व क्रिकेट में शीर्ष स्थान हासिल किया जा सकता है। भारत की यह ऐतिहासिक जीत लंबे समय तक क्रिकेट प्रेमियों की यादों में दर्ज रहेगी और विश्व क्रिकेट में भारत के वर्चस्व की नई कहानी लिखेगी।

भारत की ऐतिहासिक जीत पर मुख्यमंत्री साय ने दी बधाई

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने टी20 विश्वकप के फाइनल मुकाबले में शानदार प्रदर्शन करते हुए भारत द्वारा विश्व कप का खिताब जीतने पर टीम इंडिया को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ दी हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि टी20 विश्वकप के फाइनल मुकाबले में शानदार प्रदर्शन करते हुए टीम इंडिया के हमारे धुरंधरों ने एक बार फिर विश्व कप का खिताब जीतकर हर भारतवासी को गौरवान्वित किया है। इस जीत के साथ ही भारत यह खिताब 3 बार जीतने वाला पहला देश बन गया है। उन्होंने इस गौरवपूर्ण उपलब्धि पर पूरी टीम को हार्दिक बधाई देते हुए आशा व्यक्ति की कि भविष्य में भी हमारा तिरंगा यूँ ही विश्व मंच पर शान से लहराता रहे और भारत का गौरव निरंतर बढ़ता रहे।

न्यू प्रेस क्लब ऑफ भिलाई ने किया महिला पत्रकारों का सम्मान

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

न्यू प्रेस क्लब का भिलाई नगर द्वारा रविवार को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर भिलाई में कार्यरत महिला पत्रकारों का सम्मान किया गया। प्रेस क्लब भवन नेहरू रोड सुपेला में आयोजित इस सम्मान समारोह में भिलाई आईबीसी ब्यूरो कोमल धनेसर, पत्रकार अनुभूति भाकरे, हरिभूमि की रिपोर्टर संगीता मिश्रा तथा छत्तीसगढ़ क्रॉनिकल भिलाई की ब्यूरो प्रमुख भावना पांडे मैडम का सम्मान किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित महिला पत्रकारों के सम्मान समारोह में न्यू प्रेस क्लब आफ भिलाई नगर के नवनिर्वाचित अध्यक्ष अनिल गुप्ता ने मौजूद पत्रकारों का स्वागत किया। महिला पत्रकारों के सम्मान में उन्हें शॉल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। कार्यक्रम के दौरान महिला पत्रकारों ने न्यू प्रेस ऑफ भिलाई नगर की नई कार्यकारिणी द्वारा आयोजित इस समारोह के सराहना की। पत्रकार कोमल दर्शन ने कहा अपनों के बीच सम्मान पाना गर्व का विषय है। आज अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कई सम्मान समारोह आयोजित हुए जिनमें से प्रेस क्लब द्वारा आयोजित या सम्मान समारोह हमारे लिए बेहद खास रहा।

हरिभूमि की पत्रकार संगीता मिश्रा ने कहा कि उन्हें या सम्मान पाकर बेहद खुशी मिली है इस आयोजन के लिए उन्होंने पूरे प्रेस क्लब को बधाई दी। पत्रकार अनुभूति भाकरे ने कहा कि इस सम्मान से अभिभूत हूं। सप्ताह भर के भीतर नई कार्यकारिणी का यह सराहनीय कार्यक्रम है। कार्यक्रम के दौरान मंच का संचालन कार्यकारिणी सदस्य सर्वेश सिंह द्वारा किया गया। आभार प्रदर्शन वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुनील चौहान ने किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से उपाध्यक्ष जयप्रकाश आर्य, कार्यालय सचिव मोहन राव, सचिव जोगिंदर सिंह व गौकरण निषाद, कार्यकारिणी सदस्य राजकुमार आर्य, पी मोहन, सोनू यादव, सुरेन्द्र ठाकुर, योगेश वर्मा, मिथिलेश ठाकुर व सुबोध तिवारी आदि उपस्थित रहे।

पत्रकारवार्ता पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के आरोपों का प्रदेश भाजपा ने पत्रकारवार्ता लेकर दिया करारा जवाब

कांग्रेस के संरक्षण में शुरू हुई अफीम की खेती , भाजपा सरकार ने की त्वरित कार्रवाई

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में प्रतिबंधित अफीम की खेती का मामला उजागर होने के बाद उठ रहे सवालों पर प्रदेश भाजपा ने रविवार को विस्तार से जवाब दिया। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता डॉ. विजय शंकर मिश्रा, नलिनेश ठोकने, शिव नारायण पांडेय और भाजपा के प्रदेश मंत्री अमित साहू ने एकात्म परिसर में एक संयुक्त प्रेस कांफ्रेंस ली और वीडियो प्रजेंटेशन के जरिए पूरे मामले का विस्तार से जवाब देते हुए मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस के लगाए जा रहे सभी आरोपों को खारिज कर दिया। साथ ही कांग्रेस पर आरोप लगाते हुए सवाल उठाया कि जब राज्य सरकार ने इस मामले में संपूर्ण कार्रवाई कर दी थी, उसके दूसरे दिन पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल कांग्रेस नेताओं के साथ अफीम के खेत में क्यों गए?

वीडियो में अफीम के फूल की चोरी और बेचने की जो बातें सामने आ रही है। अब कांग्रेस को पहले इसका जवाब देना चाहिए? इस पूरे मामले में कांग्रेस केवल अपनी राजनीति चमकाने का कथित प्रयास कर रही है, जबकि राज्य की विष्णुदेव साय की सरकार ने मामला सामने आते ही एक घंटे के भीतर सम्पूर्ण कार्रवाई की, जो राज्य सरकार की सजगता और गंभीरता को दर्शाता है, दूसरी ओर प्रदेश

भाजपा संगठन ने भी पूर्व भाजपा नेता को पार्टी से निलंबित कर दिया और संदेश दिया कि भाजपा की सदस्यता लेकर ऐसे कृत्य करने वाले भी नही बक्शे जाएंगे।

कांग्रेस ने संरक्षण में नशे का कारोबार फला-फूला

भाजपा प्रवक्ता डॉ. विजय शंकर मिश्रा ने सबसे पहले अफीम की खेती का वीडियो दिखाया और बताया कि कैसे मक्का और गेंहू के उपज के बीच अफीम की खेती की जा रही थी। उन्होंने बताया यह कृत्य पिछले 5 सालों से चल रहा था, मतलब साफ है कि भूपेश बघेल की सरकार के समय से यह सब शुरू हुआ था। उन्होंने दोहराया कि यह सर्व विदित है कि कांग्रेस के संरक्षण में नशे का कारोबार फला-फूला। जाँच में यह स्पष्ट हो चुका है कि अफीम की यह खेती पिछले पाँच वर्षों से चल रही थी। इसका सीधा अर्थ है कि यह काला कारोबार कांग्रेस शासनकाल के दौरान शुरू हुआ और उनके संरक्षण में पनपा, मगर भाजपा की विष्णुदेव साय सरकार ने सूचना मिलते ही एक घंटे के भीतर कलेक्टर, पुलिस और सभी एजेंसियों को मौके पर भेजकर त्वरित कार्रवाई की।

कांग्रेस ने हमेशा अपराध करने वाले नेताओं को बचाया - अमित साहू

प्रेस कॉन्फ्रेंस में भाजपा के प्रदेश मंत्री अमित साहू ने भी सवाल उठाया कि किसी भाजपा नेता को ऐसे कृत्य करने की कोई छूट नही है। पार्टी ने आरोप लगते ही उक्त भाजपा नेता को पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया, लेकिन कॉंग्रेस ने कभी ऐसी हिम्मत नही दिखाई। उन्होंने कहा कांग्रेस के पूर्व मंत्री कवासी लखमा जेल में रहकर आ गए, विधायक देवेंद्र यादव, बालेश्वर पर कांग्रेस पार्टी ने क्या कार्रवाई की। इतना ही नही पूर्व मंत्री अमरजीत भगत पर आरोप लगे क्या कार्रवाई की गई। उन्होने कहा कि कांग्रेस के दर्जनों नेताओं से जुड़े कई गंभीर मामले सामने आए, कांग्रेस पार्टी ने क्या कार्रवाई की। प्रदेश की जनता सब समझ गई है, की कांग्रेस ही अपराधो की जननी है। इसलिए कांग्रेस को भाजपा संगठन पर सवाल उठाने से पहले खुद से जवाब लेना चाहिए।

प्रवक्ता डॉ. मिश्रा ने पूर्व मुख्यमंत्री बघेल से सवाल किया कि जब सरकार और प्रशासन पूरी तत्परता से कारवाई कर रहे थे, तो वह (श्री बघेल) अगले ही दिन कैमरा लेकर वहाँ क्यों पहुँच गए? बघेल के साथ जो लोग वहाँ पहुंचे, वे वीडियो में अफीम चुराकर बेचने की बात करते सुने जा रहे हैं। यह वीडियो खुद कांग्रेस की वेबसाइट पर डाला गया है। उन्होंने तंज कसते हुए कांग्रेस के लोगों की संलिप्तता का संदेह जाहिर किया और कहा कि विपक्ष तब शोर मचाता है, जब कार्रवाई न हो रही हो। यहाँ तो राज्य सरकार ने अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया था। ऐसे में कांग्रेस नेताओं का वहाँ जमावड़ा सिर्फ 'राजनीति चमकाने' की कोशिश है या अपने करीबियों को बचाने का प्रयास?

प्रवक्ता डॉ. मिश्रा ने आगे यह भी सवाल उठाया कि क्या श्री बघेल वहाँ इसलिए पहुँचे थे ताकि जाँच की दिशा मोड़ी जा सके या सबूतों के साथ छेड़छाड़ की जा सके? उन्होंने विश्वास जताया कि इस मामले की गहन जाँच और मिलने वाले तथ्य से आगे सत्यता का खुलासा होगा। राज्य सरकार किसी भी स्तर पर छत्तीसगढ़ को अशांत करने वाले और नशा के किसी भी सौदागर को नही बख्शने वाली है, ऐसे लोगो पर कड़ी कार्रवाई होगी।

महत्वपूर्ण सूचना! हमारे पाठकों के लिए
सांध्य दैनिक नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
सांध्य दैनिक नई दृष्टिबिंदु का E-Paper भी तैयार है। प्रतिदिन शाम 4:00 बजे पेपर नई दृष्टिबिंदु के गुगल के साइट Nayi Drishtibindu पर अपलोड हो जाता है। सभी पाठकों से आग्रह है कि प्रतिदिन शाम 4:00 बजे साइट पर Nayi Drishti bindu E-Paper सर्च कर ई पेपर देख सकते हैं।
Google
NAYI DRISHTIBINDU E-PAPER
शाम 4 बजे से पढ़े

कैपिटल रिपेयर के बाद पीबीएस का स्टीम टर्बो ब्लोअर-1 चालू, सबसे बड़े ब्लास्ट फर्नेस महमाया को मिलेगा बल

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

भिलाई इस्पात संयंत्र के पावर एंड ब्लोइंग स्टेशन (पीबीएस) में स्थापित स्टीम टर्बो ब्लोअर-1 का कैपिटल रिपेयर पूर्ण होने के पश्चात उसे सफलतापूर्वक पुनः प्रारंभ किया गया। यह टर्बो ब्लोअर मॉडेक्स में स्थापित संयंत्र के सबसे बड़े ब्लास्ट फर्नेस 'महमाया' को कोल्ड ब्लास्ट एयर की आपूर्ति करता है, जो ब्लास्ट फर्नेस के सुचारु एवं निरंतर संचालन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस टर्बो ब्लोअर का कैपिटल रिपेयर भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (बीएचईएल) द्वारा संपादित किया गया।

उल्लेखनीय है कि 7.5 मिलियन टन परियोजना के अंतर्गत महमाया ब्लास्ट फर्नेस की स्थापना की गई थी, जिसकी उत्पादन क्षमता लगभग 8000 टन प्रतिदिन है। इसके अतिरिक्त पावर एंड ब्लोइंग स्टेशन में कुल 3 टर्बो ब्लोअर स्थापित किए गए हैं, जिनमें से प्रत्येक ब्लोअर 2,19,000 एनएम-3 प्रति घंटा का फ्लो देने में सक्षम है।

स्टीम टर्बो ब्लोअर के पुनः संचालन से पूर्व मशीन के सफल संचालन की कामना के साथ पूजा-अर्चना की गई तथा नारियल फोड़कर इसका शुभारंभ किया गया। इस दौरान मुख्य अतिथि कार्यकारी निदेशक (वर्क्स) राकेश कुमार उपस्थित रहे। अतिथि विशेष के रूप में मुख्य महाप्रबंधक प्रभारी एम एंड यू बी. के. बेहरा, सीजीएम इलेक्ट्रिकल टी. के कृष्णा कुमार तथा सीजीएम बीएफ मनोज कुमार भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम में महाप्रबंधक सेफ्टी संजय अग्रवाल, महाप्रबंधक इंस्ट्रूमेंटेशन मधु पिछै, महाप्रबंधक जी. के. कुंडू, ए एम डेनी पीएसडी विभाग से महाप्रबंधक आर. आर. ठाकुर, महाप्रबंधक बैसी जॉर्ज तथा उपमहाप्रबंधक तथा ईडी वर्क्स सेक्रेट्रिएट वी. पी. तिवारी भी मौजूद रहे। इसके अतिरिक्त पीबीएस विभाग से महाप्रबंधक प्रभारी शेख जाकिर, महाप्रबंधक जी. पी. कुर्रे, संजय अग्रवाल, सैय्यद असद हुसैन, मुश्ताक अहमद परें, बीएचईएल से प्रशांत गुप्ता, राहुल चौरे सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी भी उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि कार्यकारी निदेशक (वर्क्स) राकेश कुमार ने पीबीएस टीम के प्रयासों की सराहना करते हुए उनकी पीठ थपथपाई तथा भविष्य में भी पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि स्टीम टर्बो ब्लोअर-1 के सफल कैपिटल रिपेयर एवं पुनः संचालन से ब्लास्ट फर्नेस महमाया के संचालन को और अधिक मजबूती मिलेगी तथा संयंत्र के उत्पादन लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

खास खबर

महिला दिवस : तीजन बाई की आवाज से पंडवानी को मिली विश्व मंच पर पहचान

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति को देश और दुनिया में पहचान दिलाने वाली प्रसिद्ध पंडवानी गायिका तीजन बाई आज किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। अपनी दमदार आवाज, जीवंत अभिनय और अनोखी शैली के कारण उन्होंने पंडवानी लोकगायन को अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुंचाया। तीजन बाई का जन्म वर्ष 1956 में दुर्ग जिले के गनियारी गांव में एक साधारण परिवार में हुआ था। बचपन से ही उन्हें पंडवानी सुनने और गाने का शौक था। उनके नाना बृजलाल पारधी पंडवानी गाया करते थे, जिन्हें सुनकर ही तीजन बाई ने इस कला को सीखा।

उस समय समाज में यह धारणा थी कि पंडवानी गाना महिलाओं के लिए उचित नहीं माना जाता था। इसके बावजूद तीजन बाई ने अपने जुनून और मेहनत के बल पर इस कला को अपनाया और आगे बढ़ाया। बताया जाता है कि तीजन बाई ने मात्र 13 वर्ष की उम्र में अपना पहला सार्वजनिक कार्यक्रम किया। उनकी गायकी और अभिनय शैली ने धीरे-धीरे लोगों का ध्यान आकर्षित किया और वे छत्तीसगढ़ ही नहीं बल्कि पूरे देश में प्रसिद्ध हो गईं। बाद में उन्हें देश और विदेश के कई बड़े मंचों पर प्रस्तुति देने का अवसर मिला। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, जापान सहित कई देशों में उन्होंने पंडवानी की प्रस्तुति दी, जिससे छत्तीसगढ़ की लोककला को वैश्विक पहचान मिली।

उनकी कला और योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें कई बड़े सम्मानों से नवाजा। उन्हें 1987 में पद्मश्री, 2003 में पद्म भूषण और 2019 में देश का दूसरा सबसे बड़ा नागरिक सम्मान पद्म विभूषण प्रदान किया गया। इसके अलावा उन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 2007 में नृत्य शिरोमणि सम्मान और अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है। आज भी तीजन बाई पंडवानी के माध्यम से महाभारत की कथाओं और छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का काम कर रही हैं। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर तीजन बाई की कहानी यह संदेश देती है कि मेहनत, आत्मविश्वास और लगन से कोई भी व्यक्ति समाज की सीमाओं को पार कर बड़ी पहचान बना सकता है। उनकी सफलता हर महिला और कलाकार के लिए एक प्रेरणा है।

ब्लॉक कांग्रेस कमेटी क्रमांक-6 रिसाली कार्यकारिणी की हुई बैठक

रिसाली। ब्लॉक कांग्रेस कमेटी क्र. 6 रिसाली की कार्यकारिणी बैठक ब्लॉक अध्यक्ष दिनेश पटेल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में संगठन की मजबूती, आगामी राजनीतिक गतिविधियों, संगठन विस्तार एवं बूथ स्तर तक कांग्रेस पार्टी को सशक्त बनाने जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। इस दौरान उपस्थित पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने विचार रखे और संगठन को मजबूत बनाने के लिए मिलकर कार्य करने का संकल्प लिया।

ब्लॉक अध्यक्ष दिनेश पटेल ने सभी पदाधिकारियों से आगामी कार्यक्रमों एवं निगम चुनाव को ध्यान में रखते हुए वार्ड एवं बूथ स्तर पर सक्रियता बढ़ाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सभी कार्यकर्ता जनता के बीच जाकर कांग्रेस की नीतियों और जनहितकारी कार्यों को पहुंचाएं तथा संगठन को और अधिक मजबूत बनाएं। बैठक में ब्लॉक कांग्रेस उपाध्यक्षः डोमार देशमुख,लोकुमल होतवानी,जोसेफ साबू। महामंत्रीः वीरेंद्र पाल, चन्द्र कुमार साहू, वादिका साहू। मीडिया प्रभारीः राजेश साहू। सह-मीडिया प्रभारीः दीपक टंडन। सचिवः शिशिर साहू, उत्तम कुमार देशलहरे, जयंती महानंद, बबिता मानिकपुरी, प्रमोद चौधरी, वजीहुद्दीन सिद्धिकी,विनय गजपाल,दुधे राम जंघेल, प्रियंका गौतम। सह-सचिवः राहिल खान, सी पी देशलहरे, माया रानी, दिनेश बेंजामिन, दीपक तिवारी, शबनम बेगम एवं गुलाब दास मानिकपुरी उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस महिलाओं का किया सम्मान विधायक ललित चंद्राकर ने नारी शक्ति को किया नमन

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर मंगल भवन उतई में महिला एवं बाल विकास विभाग, जिला दुर्ग द्वारा महिला सम्मान समारोह एवं महतारी वंदन सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने नारी शक्ति को नमन करते हुए महिलाओं को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम के दौरान विधायक चंद्राकर ने महिला समूहों द्वारा लगाए गए स्टॉलों और आकर्षक रंगोली का निरीक्षण किया तथा उनके प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित भी किया गया।

विधायक ललित चंद्राकर ने अपने संबोधन में कहा कि हमारी संस्कृति में नारी को शक्ति का स्वरूप माना गया है और जहां नारी का सम्मान होता है, वहीं देवताओं का वास होता है। उन्होंने कहा कि हर पुरुष की सफलता और स्वस्थ समाज के निर्माण के पीछे कहीं न कहीं नारी शक्ति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। एक नारी शिक्षित होती है तो दो परिवार और पूरा समाज शिक्षित होता है। उन्होंने कहा कि माताएं बच्चों की प्रथम पाठशाला होती हैं और परिवार को संस्कारवान बनाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सम्राट शिवाजी के जीवन में माता जीजाबाई के योगदान का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि नारी शक्ति समाज की प्रेरणा और शक्ति का स्रोत है।

श्री चंद्राकर ने महतारी वंदन योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रदेश की माताओं-बहनों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए सरकार हर माह 1000 की आर्थिक सहायता उनके खातों में पहुंचा रही है। यह योजना महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और इसका लाभ लगातार जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि आज महिलाएं स्व-सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में अहम भूमिका निभा रही हैं। विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में माताओं-बहनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष सरस्वती बंजारे, उतई नगर पंचायत अध्यक्ष सरस्वती साहू, जिला पंचायत सभापति श्रद्धा साहू, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष माया बेलचंदन, पार्षद संगीत रजक, लता सोनवानी, विजय लक्ष्मी साहू, पूर्व जनपद अध्यक्ष झमीत गायकवाड़, परियोजना अधिकारी उषा झा, तहसीलदार झुमा यदु, कृषि वैज्ञानिक डॉ. निशा शर्मा, डॉ. ज्योति ध्रुव सहित महिलाएं एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

महिला दिवस पर मंत्री गजेन्द्र यादव ने मातृशक्ति का किया सम्मान

दुर्ग। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दुर्ग के गंजपारा स्थित क्षेत्रीय कार्यालय में क्षेत्र की महिलाओं और कार्यकर्ताओं का सम्मान किये। इस अवसर पर केबिनेट मंत्री गजेन्द्र यादव ने उपस्थित मातृशक्ति को शॉल भेंट कर उनका सम्मान कर और उनके प्रति आभार व्यक्त किये। केबिनेट मंत्री गजेन्द्र यादव ने कहा कि मातृशक्ति का समर्पण, परिश्रम और समाज निर्माण में उनका योगदान सदैव प्रेरणादायी रहा है। उन्होंने कहा कि परिवार से लेकर समाज और राष्ट्र निर्माण तक महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रदेश की भाजपा सरकार महिलाओं के उत्थान, सम्मान और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए निरंतर प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है तथा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने का कार्य कर रही है। इसके पश्चात मंत्री गजेन्द्र यादव महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा आयोजित महतारी वंदन सम्मेलन में भी शामिल हुए। कार्यक्रम में महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली दुर्ग की नारी शक्तियों को सम्मानित किये। मंत्री यादव ने उन्हें आगे बढ़ने, समाज में सकारात्मक योगदान देने तथा बेटियों को शिक्षित और संस्कारवान बनाने के लिए प्रेरित किये।

छत्तीसगढ़ सेवा रत्न से सम्मानित हुए समाज सेवी दिलीप ठाकुर

पहले भी मिला है सम्मान

सेवा योद्धा मानव सेवा सम्मान, छत्तीसगढ़ गौरव रत्न तथा छत्तीसगढ़ सेवा रत्न जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा जा चुका है

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

सामाजिक, शैक्षणिक और जनसेवा के क्षेत्र में लंबे समय से सक्रिय समाजसेवी दिलीप ठाकुर को छत्तीसगढ़ शासन द्वारा छत्तीसगढ़ सेवा रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय द्वारा नया विधानसभा भवन में आयोजित कार्यक्रम में मेडल प्रदान कर दिया गया।

दिलीप ठाकुर, ओम सत्यम शिक्षण एवं जन विकास समिति के सचिव तथा जिला चिकित्सालय के अंतर्गत जीवन दीप समिति के आजीवन सदस्य हैं। उन्होंने पिछले लगभग 30 वर्षों से सामाजिक, शैक्षणिक, आध्यात्मिक तथा स्वास्थ्य परीक्षण एवं मार्गदर्शन शिविरों के माध्यम से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के जरूरतमंद लोगों की निरंतर सेवा की है। उनके द्वारा किए जा रहे जनहितकारी और रचनात्मक कार्यों को देखते हुए उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया।

ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व भी दिलीप ठाकुर को मुख्यमंत्री विष्णु देव साय द्वारा सेवा योद्धा मानव सेवा सम्मान, छत्तीसगढ़ गौरव रत्न तथा छत्तीसगढ़ सेवा रत्न जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा जा चुका है। इसके अलावा उन्हें शहीद वीर नारायण सिंह गोंडवाना रत्न और शहीद रामाधीन गोंड सम्मान भी प्राप्त हो चुके हैं। वहीं छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह द्वारा उन्हें छत्तीसगढ़ रत्न, गुरु रत्न तथा राज्य स्तरीय रानी दुर्गावती सम्मान से भी सम्मानित किया गया है।

इस उपलब्धि पर केंद्रीय गोंडवाना समाज धमधा गढ़, ओम सत्यम शिक्षण एवं जन विकास समिति, राजपूत क्षत्रिय महासभा 1282 धमधा गढ़, श्री सत्य साई सेवा समिति, सत्यम शिवम सुंदरम समिति, जीवन दीप समिति के पदाधिकारियों, कार्मिकों और चिकित्सकों ने दिलीप ठाकुर को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

किराया नहीं देने पर मानस भवन के पास 16 गुमटियां सील, दुर्ग निगम ने की कार्रवाई

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

नगर पालिक निगम दुर्ग सीमा क्षेत्र अंतर्गत मानस भवन के पास लगे अस्थाई गुमटीधारियों पर निगम प्रशासन द्वारा बड़ी कार्रवाई की गई। गुमटीधारियों द्वारा लंबे समय से बकाया किराया राशि जमा नहीं किए जाने के कारण आयुक्त सुमित अग्रवाल के सख्त निर्देश पर निगम के बाजार विभाग के ईश्वर वर्मा और शशिकांत यादव अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे।

निगम अमले ने मानस भवन के पास लगे अस्थाई 16 गुमटियों को सीलबंद करने की कार्रवाई की। निगम प्रशासन ने बताया कि कई बार नोटिस देने के बाद भी संबंधित गुमटीधारियों द्वारा किराया राशि जमा नहीं की गई, जिसके चलते यह सख्त कदम उठाया गया।

निगम स्पष्ट किया है कि दुर्ग नगर निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत जिन दुकानदारों द्वारा बकाया किराया राशि जमा नहीं की जाएगी, उन दुकानों पर भी इसी प्रकार सीलबंद की कार्रवाई कर निगम आधिपत्य में लिया जाएगा। मानस भवन के पास स्थित अस्थाई गुमटीधारियों द्वारा बकाया किराया राशि जमा नहीं किए जाने के कारण 16 गुमटियों में सीलबंद की कार्रवाई की गई। आयुक्त सुमित अग्रवाल ने कहा कि निगम की संपत्तियों का किराया समय पर जमा करना आवश्यक है। नियमों की अनदेखी करने वालों के खिलाफ आगे भी सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस : विधायक रिकेश सेन ने किया 22 हजार महिलाओं का सम्मान

शांति नगर दशहरा मैदान में उमड़ा जनसैलाब : विधायक ने खुद के खिलाफ रची जा रही हत्या की साजिश का किया बड़ा खुलासा

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन द्वारा 'विधायक की शक्ति' योजना के अंतर्गत एक विशाल भव्य कार्यक्रम का आयोजन शांति नगर स्थित दशहरा मैदान में किया गया। इस ऐतिहासिक आयोजन में विधानसभा क्षेत्र की लगभग 22 हजार महिलाओं ने शिरकत की, जिन्हें विधायक ने सम्मानित कर उपहार भेंट किए।

उपहार पाकर खिले चेहरे

उपहार मिलने के बाद महिलाओं ने खुशी जाहिर की और विधायक की इस पहल को महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक बड़ा कदम बताया। कार्यक्रम में भारी संख्या में स्थानीय जनप्रतिनिधि, प्रबुद्ध नागरिक और वैशाली नगर विधानसभा के लोग उपस्थित रहे।

नारी शक्ति का सम्मान और 'विधायक की शक्ति' योजना

कार्यक्रम के दौरान विधायक रिकेश सेन ने मंच से उन महिलाओं को विशेष रूप से सम्मानित किया जिन्होंने शिक्षा, समाज सेवा, स्वरोजगार और अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य कर समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। विधायक श्री सेन ने कहा कि महिलाएं समाज की असली शक्ति हैं। 'विधायक की शक्ति' योजना का उद्देश्य हर महिला को सशक्त, आत्मनिर्भर और सुरक्षित महसूस कराना है।

सुरक्षा और उत्साह का माहौल

दशहरा मैदान में सुरक्षा के कड़े इंतजाम थे और महिलाओं के लिए बैठने व जलपान की समुचित व्यवस्था की गई थी। सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने समां बांधे रखा और देर शाम तक उत्सव जैसा माहौल रहा।

मंच से हुआ सनसनीखेज खुलासा

कार्यक्रम के दौरान उस वक्त सनसनी फैल गई जब विधायक रिकेश सेन ने अपनी सुरक्षा और निजी जीवन को लेकर एक बड़ा खुलासा किया। उन्होंने सार्वजनिक रूप से बताया कि पिछले 2 वर्षों से कुछ असामाजिक तत्व उनकी हत्या की साजिश रच रहे थे। उन्होंने मंच से इस साजिश में शामिल चेहरों और उनके मंसूबों का जिक्र करते हुए स्पष्ट किया कि वे जनता की सेवा से पीछे नहीं हटेंगे। कार्यक्रम में मौजूद 22 हजार महिलाओं को स्मृति चिन्ह और विधायक की ओर से विशेष उपहार प्रदान किए गए।

गर्मी से बचाव के लिए स्वास्थ्य विभाग सतर्क हीटवेव से निपटने की तैयारियाँ तेज

अस्पतालों में हीट स्ट्रोक प्रबंधन कक्ष, दवाइयों और ओआरएस की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

राज्य में बढ़ते तापमान और संभावित हीटवेव की स्थिति को देखते हुए स्वास्थ्य सेवाओं को सजग रखने की दिशा में आवश्यक तैयारियाँ तेज कर दी गई हैं। संचालनालय स्वास्थ्य सेवाएँ, छत्तीसगढ़ द्वारा जारी एडवाइजरी के अनुसार जिला अस्पतालों सहित सभी स्वास्थ्य संस्थानों में गर्मी से होने वाली बीमारियों के प्रबंधन के लिए आवश्यक व्यवस्थाएँ सुनिश्चित की जा रही हैं। जारी निर्देशों के अनुसार जिला अस्पतालों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (CHC) और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (PHC) में हीट स्ट्रोक प्रबंधन कक्ष सक्रिय रखे जाएंगे। इन केंद्रों में पर्याप्त मात्रा में ओआरएस, आईवी फ्लुड, आवश्यक जीवन रक्षक दवाइयों तथा शीतलन संबंधी व्यवस्थाएँ उपलब्ध रखने को कहा गया है, ताकि गर्मी से प्रभावित मरीजों को तत्काल उपचार मिल सके। समुचित सुविधाओं से युक्त ऊष्मा आघात कक्ष रायपुर और दुर्ग जिला अस्पताल में बनाये जा चुके हैं साथ ही अन्य सभी जिलों में भी इस प्रकार के कक्ष बनाएं जाने निर्देश दिए गए हैं। एम्बुलेंस सेवाओं को भी अलर्ट मोड में रखने और जरूरत पड़ने पर त्वरित चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया है।

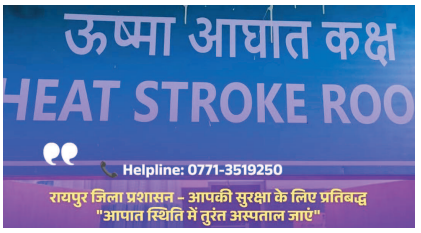

राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्यक्रम की राज्य कार्यक्रम अधिकारी डॉ स्मृति देवांगन ने बताया की अत्यधिक तापमान के संपर्क में आने से शरीर में हीट स्ट्रेस की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, जिससे हीट रैश, मांसपेशियों में ऐंठन, चक्कर आना, सिरदर्द, अत्यधिक प्यास और उल्टी जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं। गंभीर अवस्था में शरीर का तापमान 40 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक हो जाने पर हीट स्ट्रोक की स्थिति बन जाती है, जो चिकित्सकीय आपातकाल मानी जाती है। हीट वेव से बचाव के लिए आवश्यक है की गर्मी के मौसम में पर्याप्त मात्रा में पानी का सेवन करें, हल्के व ढीले सूती कपड़े पहनें तथा दोपहर 12 बजे से 3 बजे के बीच धूप में निकलने से बचें। घर से बाहर निकलते समय सिर को ढककर रखना, नींबू पानी, छाछ और मौसमी फलों का सेवन करना शरीर को हाइड्रेट रखने में सहायक होता है।

बच्चों, बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं और खुले में काम करने वाले श्रमिकों को गर्मी से अधिक जोखिम माना गया है। ऐसे में इन वर्गों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। यदि किसी व्यक्ति में तेज बुखार, बेहोशी, भ्रम, अत्यधिक कमजोरी या पसीना आना बंद होने जैसे लक्षण दिखाई दें तो उसे तुरंत ठंडी जगह पर ले जाकर आपातकालीन सेवा 108 के माध्यम से चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए। गर्मी से होने वाली बीमारियों की रोकथाम के लिए समय पर सावधानी और जागरूकता को सबसे प्रभावी उपाय माना गया है। इसी उद्देश्य से स्वास्थ्य संस्थानों में उपचार संबंधी व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने के साथ-साथ आम नागरिकों को बचाव के उपायों के प्रति जागरूक करने पर भी जोर दिया जा रहा है।

खास खबर

9 आईपीएस अधिकारियों को मिला वेतनवृद्धि का तोहफा, गृह विभाग ने जारी किया आदेश

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ सरकार ने भारतीय पुलिस सेवा (IPS) के अधिकारियों को बड़ी राहत दी है। राज्य के 9 आईपीएस अधिकारियों को वेतनवृद्धि (इंक्रीमेंट) देने का फैसला लिया गया है। इस संबंध में गृह विभाग द्वारा आधिकारिक आदेश जारी कर दिया गया है, जिसके बाद यह निर्णय तत्काल प्रभाव से लागू हो गया है।

जारी आदेश के मुताबिक जिन आईपीएस अधिकारियों को वेतनवृद्धि का लाभ मिला है, उनमें उमेश चौधरी, मनोज कुमार खिलारी, रवि कुमार कुर्रे, सुरजन राम भगत, दर्शन सिंह मरावी, झाड़ूराम ठाकुर, प्रफुल्ल कुमार ठाकुर, विजय कुमार पाण्डेय और सुनील शर्मा के नाम शामिल हैं। गृह विभाग की ओर से स्पष्ट किया गया है कि इन अधिकारियों को नियमों के तहत वार्षिक वेतनवृद्धि स्वीकृत की गई है। आदेश जारी होते ही यह बढ़ोतरी प्रभावी मानी जाएगी। राज्य सरकार के इस निर्णय से संबंधित अधिकारियों को वेतन संरचना में बढ़ोतरी का लाभ मिलेगा।

किसान परिवार को गंभीर बीमारी के इलाज में शासन से मिली मदद, मिला नया जीवन

रायपुर। सक्ती जिले के ग्राम कोंमो निवासी श्रीमती मीना महंत को इस वर्ष जून माह की शुरूआत में अचानक से हार्ट अटैक आया। आनन-फानन में उन्हें नजदीकी अस्पताल में भर्ती किया गया जहाँ डाक्टरों द्वारा उन्हें हार्ट की एक नस में ब्लोकेज होने की बात कही गई तथा हार्ट अटैक के बेहतर इलाज हेतु रायपुर स्थित मेकाहारा में रिफर किया गया। मेकाहारा में उनके स्वास्थ्य जाँच के पश्चात डाक्टरों ने उनके हार्ट की सर्जरी कराने तथा सर्जरी में लगभग 05 लाख रुपये खर्च आने की बात कही गई।

श्रीमती मीना महंत के पति जगन्नाथ दास ने बताया कि हम सभी संयुक्त परिवार में रहते हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति काफी कमजोर है। हार्ट सर्जरी की लागत लगभग 05 लाख रुपये आने की जानकारी मिलने पर मेरी पत्नी की सर्जरी का खर्च वहन नहीं कर सकते थे। जगन्नाथ दास ने बताया कि ऐसे विकट परिस्थिति में हमें मुख्यमंत्री विशेष स्वास्थ्य सहायता योजना की जानकारी मिली और मेरी पत्नी के हार्ट की सर्जरी संभव होने की उम्मीद की एक किरण नजर आई। हमने रायपुर मेकाहारा के डाक्टर द्वारा इलाज में आने वाले खर्च का प्रस्ताव बनवाया और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निवास पहुँचकर उनसे इलाज हेतु मदद के लिए आवेदन प्रस्तुत किया। हमारे द्वारा दिए गए आवेदन पर त्वरित कार्रवाई करते हुए मुख्यमंत्री साय द्वारा मेरी पत्नी की हार्ट की सर्जरी हेतु राशि की स्वीकृति दी गई।

पुरातत्त्वीय धरोहरों के संरक्षण में जनभागीदारी बढ़ाने की पहल, विशेषज्ञों ने साझा किए विरासत संरक्षण के अनुभव

जिला पुरातत्त्वीय संघों के गठन पर तीन दिवसीय कार्यशाला

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

प्रदेश की पुरातत्त्वीय धरोहरों के संरक्षण, संवर्धन और जनभागीदारी को सुदृढ़ बनाने की दिशा में संस्कृति विभाग द्वारा एक महत्वपूर्ण पहल की गई है। संस्कृति मंत्री राजेश अग्रवाल के निर्देश पर संस्कृति विभाग अंतर्गत पुरातत्त्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय संचालनालय, रायपुर द्वारा जिला पुरातत्त्वीय संघों के निर्माण एवं कार्यविधियाँ विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यशाला महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय, सिविल लाइन्स, रायपुर में आयोजित है।

कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य राज्य के विभिन्न जिलों में जिला पुरातत्त्वीय संघों के गठन, उनके कार्य एवं दायित्वों को स्पष्ट करना तथा पुरातत्त्वीय धरोहरों के संरक्षण में उनकी सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करना है। इस आयोजन के माध्यम से जिला स्तर पर पुरातत्त्वीय धरोहरों के संरक्षण के लिए एक मजबूत संस्थागत ढांचा तैयार करने और स्थानीय स्तर पर जनसहभागिता को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जा रहा है।

कार्यशाला के दौरान पुरातत्त्व, संग्रहालय प्रबंधन तथा विरासत संरक्षण से जुड़े विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न तकनीकी सत्रों का आयोजन किया जा रहा है। इन सत्रों में जिला पुरातत्त्वीय संघों के प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है, ताकि वे अपने-अपने जिलों में धरोहर संरक्षण से जुड़े कार्यों को अधिक प्रभावी ढंग से संचालित कर सकें। प्रथम तकनीकी सत्र में संग्रहालयों के संचालन में जिला पुरातत्त्वीय संघों की भूमिका विषय पर मुख्य व्याख्यान प्रो. आर. एन. विश्वकर्मा, सेवानिवृत्त प्राध्यापक एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व, इंदिरा कला एवं संगीत विश्वविद्यालय द्वारा दिया गया। उन्होंने अपने व्याख्यान में संग्रहालयों के सुचारु संचालन, स्थानीय समुदाय की भागीदारी तथा पुरातत्त्वीय धरोहरों के संरक्षण में जिला स्तर के संगठनों की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला।

इसके बाद आयोजित परिचर्चा सत्र में राज्य के विभिन्न जिलों से आए प्रतिनिधियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में जिला पुरातत्त्वीय संघों के माध्यम से संचालित गतिविधियों की जानकारी साझा की। साथ ही उन्होंने कार्यान्वयन के दौरान आने वाली चुनौतियों और समस्याओं पर भी चर्चा की, जिन पर विशेषज्ञों ने व्यावहारिक और समाधानकारी सुझाव प्रस्तुत किए। पुरातत्त्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय संचालनालय के संचालक विवेक आचार्य ने बताया कि इस कार्यशाला के माध्यम से जिला स्तर पर पुरातत्त्वीय धरोहरों के संरक्षण के लिए संस्थागत व्यवस्था को मजबूत करने के साथ-साथ स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। इससे प्रदेश की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण को नई गति मिलेगी।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में कार्यक्रम प्रभारी डॉ. पी.सी. पारख, प्रभात कुमार सिंह, डॉ. अरुंधति परिहार, श्रीमती रोशनी शर्मा, डॉ. वृषोत्तम साहू, प्रवीन तिर्की, डॉ. राजीव मिंज, विष्णु नेताम, समीर टछु, मुकेश जोशी, अमर भरतद्वाज, नूतन एक्का एवं अरुण निर्मलकर सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

छत्तीसगढ़ी महतारी अस्मिता रथयात्रा दोबारा शुरू, गांव-गांव में किसानों का समर्थन

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

होली के बाद एक बार फिर छत्तीसगढ़ की राजनीति और किसान आंदोलन में हलचल तेज हो गई है। सर्व छत्तीसगढ़िया किसान समाज के बैनर तले छत्तीसगढ़ी महतारी अस्मिता रथयात्रा को दोबारा शुरू किया गया है। शनिवार को यह रथयात्रा गोसिया गांव से प्रारंभ होकर आसपास के कई गांवों में पहुंची, जहां ग्रामीणों और किसानों ने इसका गमजोशी से स्वागत किया।

रथयात्रा गोसिया से निकलकर पेंद्री, उलट, बगदेही, मोहतरा, झिरौनी, जिल्दा, धरमपुरा और मानिचौरी सहित कई गांवों में पहुंची। जैसे ही रथ गांवों में पहुंचा, स्थानीय किसानों और ग्रामीणों ने जयकारों और नारों के साथ इसका स्वागत किया। इस दौरान पूरे इलाके में छत्तीसगढ़ी महतारी की जय और सर्व छत्तीसगढ़िया किसान समाज जिंदाबाद जैसे नारे गूंजते रहे। यात्रा के दौरान छत्तीसगढ़ी महतारी की वंदना गीत और लोकगायक लक्ष्मण मस्तूरिया के जागरण गीतों के माध्यम से लोगों को जागरूक करने की कोशिश की गई। आयोजकों का दावा है कि कार्यक्रम से प्रभावित होकर कई गांवों के किसान, युवा और महिलाओं ने बड़ी संख्या में संगठन की सदस्यता भी ग्रहण की।

गांवों में आयोजित सभाओं को कवर्धा जिले के किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष महेंद्र कौशिक, रथयात्रा प्रभारी लालाराम वर्मा और गणेशराम कौशिक ने संबोधित किया। महेंद्र कौशिक ने कहा कि किसानों की समस्याओं और छत्तीसगढ़ियों के साथ हो रहे कथित शोषण के मुद्दों को लेकर आंदोलन जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि राज्य आंदोलन से जुड़े लोग इन मुद्दों पर लगातार संघर्ष करने के लिए तैयार हैं।

वहीं रथयात्रा प्रभारी लालाराम वर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि महासमुंद जिले में छत्तीसगढ़ी महतारी की प्रतिमा को तुमगांव थाना में रखने की घटना से लोगों की भावनाएं आहत हुई हैं। उन्होंने कहा कि जब तक इस मामले में जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई नहीं होती, तब तक आंदोलन जारी रहेगा। इस रथयात्रा के माध्यम से संगठन ग्रामीण इलाकों में जाकर किसानों और आम लोगों से संवाद कर रहा है और अपने मुद्दों को लेकर समर्थन जुटाने की कोशिश कर रहा है।

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा में 35वीं रैंक लाने वाली वैभवी को मुख्यमंत्री ने दी बधाई

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा परीक्षा में 35वीं रैंक प्राप्त करने वाली सुश्री वैभवी अग्रवाल ने आज मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से राजधानी रायपुर स्थित मुख्यमंत्री निवास कार्यालय में भेंट की। श्री साय ने सुश्री वैभवी को मिठाई खिलाकर उनकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ दीं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सुश्री वैभवी अग्रवाल ने अपनी प्रतिभा, कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प के बल पर यूपीएससी की सिविल सेवा परीक्षा में उत्कृष्ट सफलता प्राप्त कर न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ का मान बढ़ाया है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि वैभवी की यह सफलता प्रदेश के युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की उपलब्धियाँ यह संदेश देती हैं कि लक्ष्य के प्रति समर्पण, अनुशासन और निरंतर प्रयास से कोई भी मुकाम हासिल किया जा सकता है।

मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि सुश्री वैभवी अग्रवाल भविष्य में प्रशासनिक सेवा में अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करते हुए देश और समाज की सेवा में महत्वपूर्ण योगदान देंगी। उन्होंने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए आगामी दायित्वों के लिए शुभकामनाएँ दीं। इस अवसर पर वैभवी अग्रवाल के पिता शीतल अग्रवाल और भाई विनायक अग्रवाल उपस्थित थे।

जनजातीय समाज के उत्थान के लिए समर्पित रहा स्वर्णीय दिलीप सिंह जूदेव का जीवन : मुख्यमंत्री विष्णु देव साय

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने पूर्व लोकसभा सांसद स्वर्गीय दिलीप सिंह जूदेव की जयंती के अवसर पर राजधानी रायपुर के मुख्यमंत्री निवास परिसर में उनके छायाचित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धापूर्वक नमन किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री साय ने स्वर्गीय दिलीप सिंह जूदेव के दीर्घ सामाजिक-राजनीतिक जीवन और समाज के प्रति उनके उल्लेखनीय योगदानों को स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय दिलीप सिंह जूदेव का संपूर्ण जीवन समाज सेवा, जनकल्याण और विशेष रूप से जनजातीय समाज के उत्थान के लिए समर्पित रहा। उन्होंने निस्वार्थ भाव से समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के अधिकारों के लिए निरंतर कार्य किया।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि जूदेव जी के विचार, उनके आदर्श और सेवा का भाव आज भी समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं। हमें उनके बताए मार्ग पर चलकर समाज और प्रदेश के विकास के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि वनांचल क्षेत्रों में आदिवासी समाज की पहचान, स्वाभिमान और सामाजिक जागरूकता को मजबूत करने में स्वर्गीय जूदेव का योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। उनके प्रयासों से जनजातीय समाज में आत्मगौरव की भावना सशक्त हुई और समाज में सकारात्मक चेतना का संचार हुआ। इस अवसर पर विधायक गोमती साय, विधायक रायमुनि भगत, प्रवल प्रताप सिंह जूदेव, मुख्यमंत्री के प्रेस अधिकारी आलोक सिंह सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे।

जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवताओं का वास होता है-मुख्यमंत्री

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ की महिलाएं आत्मनिर्भरता और नवाचार से बना रही हैं नई पहचान

छत्तीसगढ़ की महिलाएं आज आत्मनिर्भरता, मेहनत और नवाचार के बल पर नई पहचान बना रही हैं और हमारी सरकार उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री श्री साय ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर रायपुर के इंडोर स्टेडियम में आयोजित लखपति दीदी संवाद कार्यक्रम को संबोधित करते हुए यह बात कही। कार्यक्रम में प्रदेश भर से आई स्व-सहायता समूह की हजारों महिलाएं और लखपति दीदियां उत्साहपूर्वक शामिल हुईं।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि हमारी संस्कृति में नारी को शक्ति का स्वरूप माना गया है और जहां नारी का सम्मान होता है, वहीं देवताओं का निवास होता है। उन्होंने कहा कि पहले महिलाएं घरों तक सीमित रहती थीं, लेकिन आज प्रदेश की महिलाएं स्व सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि शासन का लक्ष्य लखपति दीदियों को और अधिक सशक्त बनाकर गांव की प्रत्येक महिला को लखपति बनाना और भविष्य में लखपति ग्राम का निर्माण करना है।

श्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर 10 लाख महिलाओं को लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जिसमें से वर्तमान में लगभग 8 लाख महिलाएं लखपति दीदी बन चुकी हैं। उन्होंने कहा कि अब प्रदेश में 10 लाख से अधिक लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य रखा गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार गांवों के लोगों के लिए 18 लाख प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत कर चुकी है और इनके निर्माण में विधान की दीदियां भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। उन्होंने कहा कि महिलाओं के सम्मान और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए राज्य सरकार द्वारा महतारी वंदन योजना प्रारंभ की गई है, जिसके तहत लगभग 70 लाख माताओं-बहनों को 24 किश्तों में 15 हजार करोड़ रुपये से अधिक की राशि दी जा चुकी है तथा इस वर्ष के बजट में इसके लिए 8,200 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

श्री साय ने कहा कि लखपति दीदी योजना से प्रदेश की 5 लाख से अधिक महिलाएं आत्मनिर्भर बन चुकी हैं और अब लखपति दीदी भ्रमण योजना शुरू कर उन्हें देश-प्रदेश के व्यावसायिक केंद्रों और शक्ति पीठों का भ्रमण कराया जाएगा। उन्होंने बताया कि पंचायत विभाग द्वारा 250 महतारी सदनों का निर्माण, आंगनबाड़ी संचालन और पोषण योजनाओं के लिए भी इस वर्ष के बजट में प्रावधान किया गया है। उन्होंने कहा कि बालिकाओं को आर्थिक सुरक्षा देने के लिए रानी दुर्गावती योजना शुरू की जाएगी, जिसके तहत 18 वर्ष की आयु पूरी होने पर 1.5 लाख रुपये दिए जाएंगे।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि हमारी लखपति दीदियों से पूरे प्रदेश की माताओं-बहनों को प्रेरणा मिल रही है और अब हमारा लक्ष्य लखपति दीदियों को करोड़पति दीदी बनाना है। उन्होंने कहा कि आज शुरू हुई बकरी पालन क्लस्टर परियोजना से प्रदेश में बकरी पालन को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही इन्क्यूबेशन सेंटर की स्थापना और आईआईएम रायपुर के साथ एमओयू से स्व-सहायता समूहों की आमदनी बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में माताओं-बहनों की बड़ी भूमिका होगी। आज महिलाएं गांवों में सेंट्रिंग प्लेट उपलब्ध कराने से लेकर ड्रोन उड़ाने तक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवताओं का वास होता है। एक नारी शिक्षित होती है तो दो परिवार और पूरा समाज शिक्षित होता है।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री श्री साय ने लखपति दीदी आधारित कॉफी टेबल बुक तथा छत्तीसकला आधारित ब्रांड बुक का विमोचन किया और लखपति दीदी ग्राम पोर्टल का शुभारंभ किया। इस पोर्टल के माध्यम से ग्राम पंचायतों का मूल्यांकन कर उन्हें लखपति दीदी ग्राम घोषित किया जाएगा। कार्यक्रम में उत्कृष्ट कार्य करने वाली स्व-सहायता समूह की महिलाओं, कैडर्स और लखपति दीदियों को सम्मानित भी किया गया।

कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि छत्तीसगढ़ की महिलाएं आज आत्मनिर्भरता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही हैं। उन्होंने कहा कि पहले लोग कहते थे कि महिलाओं को लखपति बनाना संभव नहीं है, लेकिन आज प्रदेश में 8 लाख महिलाएं लखपति दीदी बन चुकी हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आने वाले समय में ये महिलाएं लखपति से करोड़पति दीदी बनने की दिशा में आगे बढ़ेंगी। कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आई महिलाओं ने अपनी प्रेरक कहानियां साझा कीं। बस्तर जिले के दरभा ब्लॉक की लखपति दीदी श्रीमती राजकुमारी कश्यप ने बताया कि एक समय ऐसा था जब उनके क्षेत्र में बाइक से आना-जाना भी कठिन था, लेकिन आज वह लखपति दीदी बन चुकी हैं। उन्होंने बताया कि उनका परिवार खेती पर निर्भर है और मुर्गीपालन से उन्हें सालाना 6-7 लाख रुपये की आय हो रही है।

बालोद जिले की भुनेश्वरी साहू ने बताया कि उन्होंने 20 हजार रुपये का ऋण लेकर सिलाई मशीन से काम शुरू किया और बाद में उन्हें सरकार की पहल से ड्रोन पायलट की ट्रेनिंग मिली। आज वह अपने क्षेत्र में ड्रोन दीदी के नाम से जानी जाती हैं। जशपुर जिले की लखपति दीदी श्रीमती अनिता साहू ने बताया कि वह ईंट निर्माण का कार्य करती हैं। उन्होंने कहा कि एक समय था जब समूह की साप्ताहिक बैठक में 10 रुपये जमा करने के लिए भी दूसरों पर निर्भर होना पड़ता था, लेकिन आज वह लखपति बन चुकी हैं। कार्यक्रम में प्रमुख सचिव श्रीमती निहारिका बारीक ने बताया कि छत्तीसगढ़ में 8 लाख महिलाएं लखपति दीदी बन चुकी हैं, जिनमें से लगभग एक लाख महिलाएं नक्सल प्रभावित क्षेत्रों से हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में 10 लाख 26 हजार स्व-सहायता समूहों से जुड़कर 30 लाख 85 हजार महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनी हैं।

इस अवसर पर राजस्व मंत्री एवं उच्च शिक्षा मंत्री टंकराम वर्मा, महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े, कौशल विकास मंत्री गुरु खुशवंत साहेब, विधायक सुनील सोनी, सचिव भीम सिंह, रायपुर संभाग के आयुक्त महादेव कावड़े, कलेक्टर गौरव सिंह, मिशन संचालक अश्वनी देवांगन सहित बड़ी संख्या में लखपति दीदियां और स्व-सहायता समूह की महिलाएं उपस्थित थी।

कृषक उन्नति योजना से किसानों के घर आई दुगुनी खुशियां - मुख्यमंत्री साय

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय राजधानी रायपुर के अश्वनी नगर स्थित सोनकर बाड़ी में आयोजित रंगपंचमी महोत्सव में शामिल हुए। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि इस वर्ष प्रदेश के किसानों के लिए होली का त्योहार विशेष खुशियां लेकर आया है।

राज्य सरकार द्वारा कृषक उन्नति योजना के अंतर्गत धान उपार्जन के अंतर की राशि के रूप में किसानों के खातों में 10 हजार 324 करोड़ रुपये की बड़ी राशि होली से पहले ही अंतरित की गई है। इससे प्रदेश के अन्नदाताओं के घरों में खुशियों का माहौल है और होली का उत्साह भी दोगुना हो गया है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि होली आपसी मतभेदों को भुलाकर प्रेम और मित्रता का संदेश देने वाला पर्व है। यह पर्व समाज में सौहार्द, सद्भाव और एकजुटता की भावना को और मजबूत करता है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि विधायक राजेश मूणत द्वारा प्रतिवर्ष रंगपंचमी के अवसर पर होली मिलन समारोह का आयोजन किया जाता है। ऐसे आयोजन समाज में आपसी मेल-मिलाप और सद्भाव को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम के अंत में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने प्रदेशवासियों को रंगपंचमी पर्व की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ दीं तथा सभी के जीवन में सुख, समृद्धि और खुशहाली की कामना की।

इस अवसर पर विधायक मोतीलाल साहू, महापौर श्रीमती मीनल चौबे सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

संपादकीय

न्यायिक उत्तर ढूंढना आलसी नजरिया

बदले राजनीतिक माहौल में अदालतें न्यायिक सक्रियता दिखाने में खुद को असमर्थ पा रही हैं, तो समाज का एक हिस्सा इसे दायित्व निर्वहन से मुंह मोड़ना मानेगा। बहरहाल, संदेश यही है कि राजनीतिक प्रश्नों का न्यायिक उत्तर ढूंढना आलसी नजरिया है।

प्रधान न्यायाधीश जस्टिस सूर्य कांत ने स्वीकार किया है कि कथित गौ-रक्षकों की अवैध गतिविधियों और भीड़ की हिंसा को रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट ने 2018 में जो 'सामान्य दिशा-निर्देश' जारी किए, उनकी निगरानी कोर्ट के लिए संभव नहीं रह गई है। तब सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों को दिशा-निर्देश दिए थे। तत्कालीन प्रधान न्यायाधीश जस्टिस दीपक मिश्र की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने कहा था कि नस्ल, जाति, वर्ग या धर्म का बिना ख्याल किए सभी नागरिकों की ऐसे अपराधों से रक्षा करना सरकार का दायित्व है।

बेंच ने ऐसी घटनाओं को रोकने, पीड़ितों से इंसाफ और मुजरिमों को दंडित करने के लिए कई उपाय तय किए। सरकारों से कहा गया कि इन उपायों पर अमल कर वे सुप्रीम कोर्ट में अनुपालना रिपोर्ट पेश करें। जाहिर है, ऐसा नहीं हुआ। उच्चतम न्यायालय के दिशा-निर्देशों के बावजूद उस तरह की घटनाएं जारी रहीं। उनका ही जिक्र करते हुए पिछले साल सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल हुई, जिसमें संबंधित अधिकारियों पर अवमानना की कार्यवाही शुरू करने की गुजारिश की गई। तभी कोर्ट ने कहा था कि विभिन्न स्थलों और विभिन्न राज्यों में हुई मॉब लिंचिंग एवं हिंसा की 'सूक्ष्म निगरानीइ करना उसके लिए संभव नहीं है। यही बात जस्टिस सूर्य कांत दोहराई है।

कहा है कि अदालत को ऐसे मामलों में 'सामान्य दिशा-निर्देश' देने के बजाय हर मामले पर अलग सुनवाई करनी चाहिए। इस तरह चीफ जस्टिस ने अदालती दायरे की पुर्नव्याख्या की है। संवैधानिक नजरिए से इसमें खोट नहीं निकाली जा सकती। मगर अतीत में खुद न्यायालयों ने स्वतः संज्ञान के जरिए संवैधानिक भावना की रक्षा की भूमिका अपनाई थी। इसे 'न्यायिक सक्रियता' कहा गया। मगर बदले राजनीतिक माहौल में अदालतें इस भूमिका को अपनाए रखने में खुद को असमर्थ पा रही हैं, तो नागरिक समाज का एक हिस्सा इसे दायित्व निर्वहन से न्यायपालिका के मुंह मोड़ने के रूप में देखेगा। बहरहाल, उन समूहों के लिए संदेश यही है कि राजनीतिक प्रश्नों का न्यायिक उत्तर ढूंढना आसान एवं आलसी नजरिया है। वैसे समाधान असल में सार्वजनिक जीवन की धूल-धक्कड़ में उतर कर ही खोजे जा सकेंगे।

औषधीय और सुगंधित पौधे : स्वास्थ्य, विरासत और आजीविका का संरक्षण

डब्ल्यूडब्ल्यूडी को सीआईटीईएस (वन्य जीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर समझौते) को स्वीकार करने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। डब्ल्यूडब्ल्यूडी 2026 का विषय औषधीय और सुगंधित पौधे : स्वास्थ्य, विरासत और आजीविका का संरक्षण है, जो स्वास्थ्य और आजीविका के लिए पादप संबंधी संसाधनों के महत्व पर प्रकाश डालता है।

लगभग 15,000 औषधीय पौधों की प्रजातियों के साथ भारत जैव विविधता से समृद्ध 17 विशाल देशों में से एक है। इनमें से 8,000 का उपयोग भारतीय औषधियों में किया जाता है जिससे यह औषधीय और सुगंधित पौधों के लिए दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण केंद्रों में से एक बन गया है।

राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली की ओर से संरक्षित 9,361 औषधीय और सुगंधित पौधों के साथ भारत प्राकृतिक पर्यावास और उससे बाहर विभिन्न प्रजातियों के संरक्षण के प्रयासों के माध्यम से सक्रिय रूप से औषधीय और सुगंधित पौधों को नष्ट होने से बचाने में लगा हुआ है।

विश्व में प्रति वर्ष 3 मार्च को विश्व वन्यजीव दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र की ओर से वन्य जीवों और वनस्पतियों के सम्मान और लोगों तथा पृथ्वी के लिए उनके महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए घोषित यह दिन वन्य जीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों के संबंध में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर समझौते (सीआईटीईस) को स्वीकार करने का प्रतीक है जो यह सुनिश्चित करने के लिए वैश्विक प्रतिबद्धता को मजबूत करता है कि वन्यजीवों से संबंधित व्यापार से प्रजातियों के अस्तित्व को खतरा नहीं है। यह दिवस इस बात को रेखांकित करता है कि वन्यजीव न केवल प्रकृति की सुंदरता का हिस्सा हैं बल्कि खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, आजीविका, जलवायु परिवर्तन से निपटने की सामर्थ्य और सतत विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। ऐसे समय में जब जैव विविधता को वन्यजीवों के निवास स्थान के विनाश, अत्यधिक शोषण, अवैध व्यापार और जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ते दबाव का सामना करना पड़ रहा है तब विश्व वन्यजीव दिवस वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए जैविक संसाधनों के संरक्षण और स्थायी रूप से उपयोग करने के लिए एक वैश्विक आह्वान है।

विश्व वन्यजीव दिवस 2026 का विषय - औषधीय और सुगंधित पौधे: स्वास्थ्य, विरासत और आजीविका का संरक्षण - दवाइयों के लिए उपयोग में लाए जाने वाले पौधों के महत्व, सांस्कृतिक परंपराओं को बचाने में उनकी भूमिका और स्थानीय समुदायों को उनसे होने वाली आय पर बल देता है। संपूर्ण विश्व में विकासशील के 70-95 प्रतिशत लोग आधारभूत स्वास्थ्य सेवाओं के लिए पारंपरिक औषधियों पर निर्भर करते हैं जिसमें से अधिकतर पौधों से मिलने वाले संसाधनों से प्राप्त होती हैं। औषधीय और सुगंधित पौधे पारंपरिक औषधीय प्रणाली की नींव हैं और आधुनिक दवा निर्माण उद्योग में भी अहम योगदान देते हैं। स्वास्थ्य के लिए उपयोग के अतिरिक्त ये पौधे परागण के लिए कीट और पक्षियों की सहायता करके, मिट्टी के स्वास्थ्य को बेहतर बनाकर और जैव विविधता को बढ़ाकर पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करते हैं। इसलिए उनका संरक्षण विशेष रूप से भारत जैसे से भरपूर देशों के लिए वैश्विक प्राथमिकता का विषय है।

भारत में औषधीय और सुगंधित पौधों की समृद्ध जैव विविधता : वन्यजीव दिवस 2026 का विषय भारत के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। भारत जैव विविधता से समृद्ध विश्व के 17 विशाल देशों में से एक है और विश्व की जैव-विविधता का 7 प्रतिशत भाग इसी देश में है। यहां 15 कृषि-जलवायु क्षेत्र, 45,000 विभिन्न पौधों की प्रजातियां हैं जिनमें से 15,000 औषधीय पौधे हैं। इनमें से लगभग 8,000 प्रजातियों का उपयोग भारतीय चिकित्सा प्रणालियों और लोक चिकित्सा प्रणालियों में किया जाता है। भारत के लगभग 70 प्रतिशत औषधीय और सुगंधित पौधे (एमएपी) पश्चिमी और पूर्वी घाट, हिमालय और अरावली क्षेत्र के उष्णकटिबंधीय जंगलों में पाए जाते हैं।

भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण ने 5,250 से अधिक पौधों की प्रजातियों की पहचान की है और विभिन्न रोगों के संबंध में उपयोग के लिए 9,567 से अधिक लोक दावों का प्रलेखन किया है। भारत इस समृद्ध विरासत की रक्षा के लिए कड़े कदम उठा रहा है। राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी) की ओर से औषधीय पौधों के संरक्षण और सतत प्रबंधन के लिए समर्पित योजना चलाई जा रही है। इसके अंतर्गत किसानों को प्रशिक्षण, अनुसंधान और विपणन में सहायता प्रदान की जाती है। ये प्रयास औषधीय पौधों की अपनी समृद्ध विरासत की सुरक्षा के लिए भारत की मजबूत और अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

संरक्षण तंत्र : भारत ने औषधीय और सुगंधित पौधों की अपनी समृद्ध विरासत को बचाने के लिए मजबूत और कई स्तरों वाला तरीका अपनाया है।

प्राकृतिक पर्यावासों में (इन-सीटू) संरक्षण : प्राकृतिक पर्यावासों में यथास्थान (इन-सीटू) संरक्षण का अर्थ है पौधों और जानवरों को उनकी उत्पत्ति के प्राकृतिक स्थलों पर सुरक्षित रखना। यह कार्य राष्ट्रीय उद्यानों, बायोस्फीयर रिजर्व और जीन अभयारण्यों के माध्यम से किया जाता है। औषधीय पौधों के लिए इस तरह के संरक्षण का एक महत्वपूर्ण उदाहरण औषधीय पादप संरक्षण क्षेत्र पहल (एमपीसीए) है। एमपीसीए एक नामित स्थल है जिसका उद्देश्य औषधीय पौधों की प्रजातियों को उनके प्राकृतिक आवासों में संरक्षित करना है। वर्तमान में भारत में 108 एमपीसीए साइट हैं जो यथास्थान (इन-सीटू) संरक्षण तकनीकों का उपयोग करके जैविक और सांस्कृतिक विविधता के साथ-साथ स्वदेशी स्वास्थ्य परंपराओं को लागू करने के लिए उपयुक्त मॉडल का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्राकृतिक पर्यावास से बाहर (एक्स-सीटू) संरक्षण : एक्स-सीटू संरक्षण का अर्थ है अपने प्राकृतिक आवासों के बाहर नियंत्रित परिस्थितियों में पौधों के आनुवंशिक संसाधनों की सुरक्षा करना ताकि दीर्घकालिक रूप से संरक्षण और जंगलों में संभावित रूप से उन्हें पुनः लगाने की व्यवस्था सुनिश्चित की जा सके। भारत में, इसके अंतर्गत राष्ट्रीय बीज जीन बैंक, राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (एनबीपीजीआर), नई दिल्ली में 9,361 औषधीय और सुगंधित पौधों (एमएपी) का संरक्षण शामिल है। इन एक्स-सीटू विधियों का उपयोग खराब बीजों की उत्पत्ति या वानस्पतिक प्रसार वाली प्रजातियों के लिए किया जाता है। साथ में, वे भविष्य में उपयोग के लिए औषधीय पौधों की विविधता को सुरक्षित करने में मदद करते हैं।

प्रमुख सरकारी योजनाएं और पहल : सरकार ने देश भर में औषधीय पौधों के संरक्षण, खेती और सतत उपयोग को बढ़ावा देने के लिए कई प्रमुख योजनाएं और पहल शुरू की हैं।

राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) : राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) आयुष मंत्रालय की प्रमुख योजना है जिसे राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के माध्यम से लागू किया गया है। यह फसलों की विविधता में सहायता करने और किसानों की आय बढ़ाने के लिए कृषि प्रणालियों के साथ जोड़कर औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देता है। यह मिशन गुणवत्ता में सुधार और मूल्य वर्धित आयुष उत्पादों के संबंध में सहयोग के लिए अच्छी कृषि और संग्रह के तौर-तरीकों (जीएसीपी) का पालन करते हुए खेती को प्रोत्साहित करता है। एनएएम आयुर्वेदिक, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी (एएसयू एंड एच) दवाओं के गुणवत्ता नियंत्रण को भी मजबूत करता है, उनके लिए कच्चे माल की स्थायी उपलब्धता सुनिश्चित करता है और एक औषधीय पौधों के मजबूत क्षेत्र को विकसित करने के लिए अनुसंधान, प्रसंस्करण और विपणन में सार्वजनिक-निजी सहयोग को बढ़ावा देता है।

औषधि वनस्पति मित्र कार्यक्रम (एवीएमपी) : यह कार्यक्रम औषधीय पौधों के संरक्षण, खेती और विपणन में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए व्यक्तियों, समुदायों और संस्थानों की पहचान करता है और उन्हें पुरस्कृत करता है। यह अधिक लोगों को औषधीय पौधों को बचाने में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।

औषधीय पौधों के संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन के लिए केंद्रीय क्षेत्र की योजना : यह योजना भारत सरकार की ओर से एनएमपीबी के माध्यम से औषधीय पादप संरक्षण और विकास क्षेत्रों (एमपीसीडीए) की स्थापना करके उनके प्राकृतिक पर्यावासों में औषधीय पौधों के संरक्षण के लिए चलाई जा रही है। इस योजना का परिव्यय 2021-22 से 2025-26 की अवधि के लिए 322.41 करोड़ रुपये है। संरक्षण की पहल को अवक्रमित और ग्रामीण भूमि पर वृक्षारोपण में सहयोग करके भी बढ़ावा दिया जाता है। इसमें अनुसंधान और गुणवत्ता के आश्वासन पर प्रमुख रूप से ध्यान दिया जाता है जिन्हें देश भर में जीएसीपी और अपरिष्कृत दवा भंडार के माध्यम से सहयोग मिलता है।

ई-चरक और न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) : ई-चरक पोर्टल किसानों को बाजारों से जोड़ता है और पूरे भारत में 25 जड़ी-बूटी बाजारों से अद्यतन मूल्य की जानकारी प्रदान करता है। एमएसपी तंत्र यह सुनिश्चित करता है कि किसानों को उनके औषधीय पौधों की उपज के लिए उचित मूल्य मिले, टिकाऊ खेती को प्रोत्साहित किया जाए और वन्य स्रोतों पर दबाव कम किया जाए।

हर्बल गार्डन और जागरूकता कार्यक्रम: छात्रों और आम जनता के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए स्कूलों, संस्थानों और सार्वजनिक स्थानों पर जड़ी-बूटियों के हर्बल गार्डन को बढ़ावा दिया जाता है। दैनिक जीवन में औषधीय पौधों के महत्व को उजागर करने के लिए रेडियो, टीवी और प्रिंट मीडिया पर विशिष्ट प्रजातियों से जुड़े मल्टीमीडिया अभियान भी चलाए जाते हैं।

पर्यावास पुनर्वास के लिए इको टास्क फोर्स: पूर्व सैनिकों और प्रादेशिक सेना के कर्मियों को शामिल करते हुए इको टास्क फोर्स तंत्र महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की उत्पत्ति के प्राकृतिक स्थानों को पुनर्जीवित करने और उनका पुनर्वास करने में लगा हुआ है। प्रत्येक इको टास्क फोर्स प्रति वर्ष कम से कम 400 हेक्टेयर क्षेत्र में कार्य करता है जिसमें देशी औषधीय पौधों की प्रजातियों का न्यूनतम 60 प्रतिशत रोपण होता है।

स्थानीय समुदायों को आजीविका सहायता : यह योजना संयुक्त वन प्रबंधन समितियों, स्वयं सहायता समूहों, वन पंचायतों और जैव विविधता प्रबंधन समितियों को वित्तीय और ढांचागत सहायता प्रदान करती है। यह स्थानीय समुदायों को औषधीय पौधों के मूल्य संवर्धन, जैव पदार्थों को सुखाने, उनके भंडारण और विपणन में मदद करता है जिससे उनकी आजीविका में सीधे सुधार होता है।

द्विपक्षीय और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग : एनएमपीबी खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ), संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) और विश्व बैंक जैसी अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के साथ सक्रिय रूप से सहयोग के माध्यम से वैश्विक स्तर पर औषधीय पादप संरक्षण को मुख्यधारा में लाने के लिए कार्य करता है। यह अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भी भाग लेता है और भारत के पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण के लिए काम करता है तथा यह सुनिश्चित करता है कि वैश्विक समझौतों के अंतर्गत उचित तरीके से लाभ साझा किया जाए।

जीआई टैग के माध्यम से भारत की औषधीय पौधों की धरोहर की रक्षा : नवारा चलन (ओरिसा सैटैवा एल.) मुख्य रूप से पलक्कड़ और केरल के आस-पास के जिलों में उगाया जाता है। आयुर्वेद में इसे षष्ठिकशाली कहा गया है। यह पंचकर्म उपचार का एक महत्वपूर्ण भाग है जिसे नवराकिजी के नाम से जाना जाता है। यह वात रोग से जुड़े दर्द के उपचार में सहायता करता है। यह पोलियो से संबंधित अक्षमता के उपचार के लिए उपयोगी है। यह रक्त परिसंचरण की समस्याओं में सुधार करता है। यह सांस के रोगों में भी मदद करता है।

ड्रोन की एक उड़ान और खेत हो जाता है तैयार

सुबह का समय, खेतों के ऊपर हल्की धूप और आसमान में उड़ता एक ड्रोन। कुछ ही मिनटों में पूरा खेत कीटनाशक से सुरक्षित हो जाता है। खेत के किनारे खड़ी एक महिला रिमोट से ड्रोन को नियंत्रित कर रही होती है। यह कोई फिल्मी दृश्य नहीं, बल्कि रायपुर जिले के आरंग विकासखंड के ग्राम नगपुरा की ड्रोन दीदी चंद्रकली वर्मा की रोजमर्रा की जिंदगी है। नवंबर 2023 में नमो ड्रोन दीदी योजना से जुड़ने के बाद चंद्रकली आज आधुनिक तकनीक के सहारे 40 किलोमीटर के दायरे में 70 गांवों के किसानों की मदद कर रही हैं और हर सीजन में लगभग डेढ़ लाख रुपए तक अर्जित कर रही हैं।

नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद चंद्रकली ने दिसंबर 2023 में ड्रोन संचालन की शुरुआत की थी। शुरुआत में उन्होंने अपने गांव और आसपास के कुछ खेतों में ही काम किया, लेकिन उनकी मेहनत और दक्षता की चर्चा जल्द ही आसपास के गांवों तक फैल गई। किसानों ने देखा कि जहां पहले घंटों लगते थे, वहीं ड्रोन से सिर्फ 10 मिनट में एक एकड़ खेत में कीटनाशक का छिड़काव हो जाता है। इससे समय की बचत होती है, श्रम कम लगता है और दवा का उपयोग भी सटीक मात्रा में होता है।

धीरे-धीरे काम इतना बढ़ गया कि आज चंद्रकली दीदी करीब 40 किलोमीटर के क्षेत्र में 70 गांवों में अपनी सेवा दे रही हैं। खरीफ और रबी सीजन के दौरान किसानों की मांग को देखते हुए उन्हें दो शिफ्ट में काम करना पड़ता है। एक खेत से दूसरे खेत तक उनका ड्रोन लगातार उड़ान भरता रहता है। ड्रोन से छिड़काव के लिए उन्हें प्रति एकड़ लगभग 300 रुपए मिलते हैं। बढ़ते काम और बड़े क्षेत्र में सेवाएं देने के कारण अब वो आसानी से सीजन में डेढ़ लाख रुपये तक कमा रही हैं। बढ़ते काम को व्यवस्थित ढंग से संभालने के लिए उन्होंने अपने साथ तीन लोगों को रोजगार भी दिया है, जो ड्रोन संचालन, दवा की तैयारी और खेतों में समन्वय का काम संभालते हैं।

घर की जिम्मेदारियों के साथ तकनीक को अपनाने की उनकी कहानी भी उतनी ही प्रेरक है। सुबह घर के कामकाज और बच्चों की देखभाल करने के बाद वे खेतों की ओर निकल पड़ती हैं। हाथ में ड्रोन का रिमोट होता है और कुछ ही क्षणों में ड्रोन आसमान में उड़ान भरकर खेतों में छिड़काव शुरू कर देता है। तकनीक के महत्व को समझते हुए चंद्रकली ने अपनी बेटी को भी इसी दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। उनकी बेटी आईटी इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रही है, जिससे वे बेहद गर्व महसूस करती हैं। ड्रोन ने उनकी जिंदगी बदल दी है, इससे न केवल उनकी आय बढ़ी है बल्कि किसानों को भी आधुनिक और सुरक्षित खेती का लाभ मिल रहा है। वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अन्य महिलाओं से भी अपील करती हैं कि वे नई तकनीक को अपनाकर आत्मनिर्भर बनें।

शुक्रिया विश्वरंजन, हम सबको 'फैजयाब' करने के लिए

(यहां फोटो उसी फैज जन्मशताब्दी समारोह की, जो नहीं जानते उनके लिए मंच पर सुर्ख (लाल) जोड़े में फैज की बेटी मुनीजा हाशमी और स्याह (काले) कपड़ों में विश्वरंजन..बाकी हस्तियां भी नामचीन शख्सियतें हैं। एक बात और, फैजयाब के मायने लाभान्वित करने से है)

वरिष्ठ पत्रकार मुहम्मद जाकिर हुसैन के फेसबुक वाल से / भिलाई

साल 2011 में छत्तीसगढ़ में डॉ. रमन सिंह मुख्यमंत्री थे। जाहिर सी बात है शासन भारतीय जनता पार्टी का था। तब पुलिस प्रमुख (डीजीपी) विश्वरंजन हुआ करते थे। उनकी पहचान एक बड़े ओहदे वाले पुलिस अफसर से हटकर साहित्यकार की ज्यादा थी।

तब उनके पुलिस मुखिया रहते समूचे छत्तीसगढ़ में साहित्य से जुड़े कई प्रमुख आयोजन हुए। भारतीय उपमहाद्वीप के मशहूर शायर फैज अहमद फैज की जन्मशताब्दी का समारोह भी विश्वरंजन के चलते संभव हो पाया था।

तब 14-15 मई 2011 को भिलाई होटल (निवास) में दो दिन के इस आयोजन में न सिर्फ हिंदुस्तान बल्कि पाकिस्तान से भी कई खास मेहमान आए थे। इनमें फैज की बेटी मुनीजा हाशमी और वहां की मशहूर स्कॉलर आरफा सैयदा जहरा भी शामिल हैं। इस ऐतिहासिक आयोजन में मुझे भी शामिल होने और हिंदुस्तान-पाकिस्तान की कुछ बड़ी हस्तियों का इंटरव्यू करने का मौका मिला था। आज विश्वरंजन के गुजरने की खबर पहुंची तो उसी आयोजन की याद आ गई। जाहिर है ऐसा आयोजन करना सिर्फ विश्वरंजन के बूते की ही बात थी।

हाल के कुछ बरसों में महान शायरों फैज और इकबाल के लिखे को लेकर जैसा माहौल बना है, उसे देखते हुए यकीन नहीं होता कि 15 बरस पहले भिलाई में ऐसा आयोजन सरकारी स्तर पर हो चुका है। जहां आज उनके कलाम 'हम देखेंगे' पर 'पहरा' लगा है। वहीं तब फैज का यह कलाम उस आयोजन में खूब गाया गया था।

खैर, विश्वरंजन एक पुलिस अफसर से बढ़कर कलम के धनी ज्यादा थे। मेरी विनम्र श्रद्धांजलि...।

महतारी वंदन योजना बनी फरिदा बेगम के परिवार का सहारा

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने के उद्देश्य से विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं का संचालन कर रही है। इन्हीं योजनाओं में से एक महतारी वंदन योजना है, जिसके माध्यम से प्रदेश की महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान कर उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। उन्ही में से एक महिला है कोंडागांव के नहरपारा निवासी फरिदा बेगम, जिन्होंने महतारी वंदन योजना से अपने परिवार का भरण पोषण कर रही है।

फरिदा बेगम ने बताया कि कुछ समय पहले उनके पति का सड़क दुर्घटना में गंभीर एक्सीडेंट हो गया था। इस दुर्घटना के कारण वे दिव्यांग हो गए हैं और अब किसी भी प्रकार का कार्य करने में असमर्थ हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति पहले से ही कमजोर थी, ऐसे में घर का खर्च चलाना उनके लिए बेहद कठिन हो गया था। विपरीत परिस्थितियों में भी फरिदा बेगम ने हार नहीं मानी और अपने घर में एक छोटा सा फैंसी स्टोर चला रही है। इस दुकान से जो थोड़ी-बहुत आय होती है, उसी से परिवार का गुजारा चलता है। उन्होंने बताया कि महतारी वंदन योजना के तहत मिलने वाली एक हजार रुपये प्रतिमाह की सहायता राशि उनके लिए बड़ी राहत साबित हो रही है।

फरिदा इस राशि को दो-तीन महीनों तक जमा करती हैं और फिर उससे अपनी दुकान के लिए सामान खरीदती हैं, जिससे उनका छोटा व्यवसाय निरंतर चलता रहता है। साथ ही वे अपनी बेटी की पढ़ाई में भी सहयोग कर रही हैं, जो उच्च शिक्षा के लिए घर से बाहर रहकर अध्ययन कर रही है। फरिदा बेगम का कहना है कि इस योजना से उन्हें आर्थिक संबल मिला है और कठिन परिस्थितियों में भी परिवार को संभालने का आत्मविश्वास बढ़ा है। उन्होंने इस सहयोग के लिए राज्य शासन, महिला एवं बाल विकास विभाग तथा मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के प्रति आभार व्यक्त किया।

संघर्षों को मात देकर मोंगरा फूल की तरह महकी दशमी नाग की किस्मत

नई दृष्टिबिंदु / बस्तर

असाधारण मेहनत, अटूट आत्मविश्वास और त्याग से बुनी गई एक ऐसी सच्ची यात्रा है, जो दिखाती है कि सीमित संसाधनों और विकट परिस्थितियों के बावजूद सफलता संभव है। यह साधारण शुरुआत से असाधारण ऊंचाइयों तक पहुँचने की कहानी है, मोंगरा फूल महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़े. दशमी नाग की, जिसमें संघर्ष, लगन और हार न मानने का जज्बा शामिल होता है। आज दशमी नाग अपनी मेहनत एवं लगन के बूते धान, मक्का, सब्जी उत्पादन सहित मुर्गी पालन और बकरीपालन जैसी विविध गतिविधियों के माध्यम से सालाना लगभग दो लाख रुपए से ज्यादा की आय अर्जित कर रही हैं। यह उनके पुराने जीवन की तुलना में एक बड़ी उपलब्धि है। आर्थिक लाभ के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व में भी एक अद्भुत परिवर्तन आया है।

बस्तर के सुदूर अंचलों में महिला सशक्तिकरण की एक नई इबारत लिखी जा रही है, जिसका जीता-जागता उदाहरण बस्तर जिला के ग्राम पंचायत मामड़पाल मुनगा की रहने वाली दशमी नाग हैं। कभी मजदूरी के भरोसे अपना जीवन बसर करने वाली दशमी आज लखपति दीदी के रूप में अपनी एक नई पहचान बना चुकी हैं। मोंगरा फूल महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद दशमी के जीवन में जो बदलाव आया, वह आज पूरे क्षेत्र की महिलाओं के लिए प्रेरक बन गया है। समूह से जुड़ने से पूर्व दशमी नाग की आर्थिक स्थिति अत्यंत सामान्य थी। वे खेती और पशुपालन तो करती थीं, लेकिन तकनीकी मार्गदर्शन और पूंजी के अभाव में उनकी आय कम ही हो पाती थी। धान, मक्का और सब्जी बाड़ी से होने वाली सीमित कमाई के साथ-साथ उन्हें अपनी आजीविका चलाने के लिए मजदूरी का सहारा लेना पड़ता था। लेकिन महिला संगठन मुनगा और तीरथधारा महिला संगठन संकुल छिंदावाड़ा के साथ जुड़ने के बाद उनके जीवन की दिशा पूरी तरह बदल गई।

ग्रामीण आजीविका मिशन से जुड़ने के बाद समूह के माध्यम से मिली कुल 41 हजार 500 रुपए की वित्तीय सहायता जिसमें डेढ़ हजार रूपए रिवॉल्विंग फंड, 15 हजार रूपए सीआईएफ और 25 हजार रूपए का बैंक लिंकेज शामिल था। यह सहायता दशमी के लिए एक मजबूत आधार साबित हुई। इस राशि का सही नियोजन करते हुए उन्होंने खेती और पशुपालन को वैज्ञानिक तरीके से विस्तार दिया। परिणाम यह हुआ कि जिस धान की खेती से वे पहले 50 हजार रुपए कमाती थीं, वह बढ़कर 65 हजार रूपए हो गया। इसी तरह बकरी पालन में उन्होंने लंबी छलांग लगाते हुए अपनी आय को 25 हजार रुपए से बढ़ाकर सीधे 55 हजार रूपए तक पहुँचाया।

जो दशमी पहले मजदूरी के लिए संघर्ष करती थीं, आज वे न केवल आत्मनिर्भर हैं, यही नहीं समाज में लोगों के साथ खुलकर आत्मविश्वास के साथ संवाद करती हैं। उनकी यह सफलता की कहानी साबित करती है कि यदि ग्रामीण महिलाओं को सही अवसर और मंच मिले, तो वे अपनी तकदीर खुद बदल सकती हैं। वह कहती हैं कि मेहनत के बल पर सफलता के शिखर हासिल किया जा सकता है।

क्लारा जेटकिन जिन्होंने रखी अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की नींव

क्लारा जेटकिन ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की बुनियाद रखी. ऐसी बुनियाद जिसने दुनियाभर में महिलाओं के हक की लड़ाई को तेज किया. आपनी आवाज को उठाने के ताकत दी. नतीजा, महिलाएं अधिकारों के लिए मुखर होने लगीं. रूढ़िवादी परंपराओं को तोड़ते हुए खुद को साबित करने लगीं. जानिए कैसे पड़ी अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की नींव और कब तय हुआ कि यह खास दिन 8 मार्च को सेलिब्रेट किया जाएगा.

क्लारा जेटकिन. यह महिला कौन है? भले ही यह नाम आपको एक बार में याद न आ रहा हो, लेकिन इन्होंने जो किया वो इतिहास बन गया. जेटकिन ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की बुनियाद रखी. ऐसी बुनियाद जिसने दुनियाभर में महिलाओं के हक की लड़ाई को तेज किया. अपनी आवाज को उठाने के ताकत दी. नतीजा, महिलाएं अधिकारों के लिए मुखर होने लगीं. रूढ़िवादी परंपराओं को तोड़ते हुए खुद को साबित करने लगीं. हालांकि, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च को ही मनाया जाएगा, ऐसा कुछ भी तय नहीं था. जानिए कैसे पड़ी अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की नींव और कब तय हुआ कि यह खास दिन 8 मार्च को सेलिब्रेट किया जाएगा.

कैसे एक आंदोलन से पड़ी इस खास दिन की नींव?

इस खास दिन की नींव 116 साल पहले 1908 में पड़ी, जब न्यूयॉर्क शहर में 15 हजार महिलाओं ने परेड निकाली. महिलाओं की मांग थी कि उनके लिए काम के घंटे कम हों. सैलरी में सुधार हो. महिलाओं को भी मतदान करने का हक मिले.

इस आंदोलन के एक साल बाद 1909 में अमेरिका की सोशलिस्ट पार्टी ने एक दिन महिलाओं के नाम समर्पित करने का फैसला लिया. पहला राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की घोषणा की. इस खास दिन को अंतरराष्ट्रीय बनाया जाए, यह सोच क्लारा जेटकिन के दिमाग में पनपी.

जेटकिन ऐसी सामाजिक कार्यकर्ता थीं, जो हमेशा महिलाओं के मुद्दों को पुरजोर तरीके से उठाती थीं. 1910 से डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगेन में कामकाजी महिलाओं के लिए आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में जेटकिन ने सुझाव दिया कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की शुरुआत होनी चाहिए. उस सम्मेलन में 17 देशों की 100 महिलाएं पहुंची थीं. वो सभी जेटकिन के सुझाव पर सहमत हो गईं. महिलाओं के आंदोलनों का असर भी दिखा था. 1917 में रूसी महिलाओं ने 'रोटी और शांति की मांग करते हुए, जार की हुकूमत के खिलाफ हड़ताल की. इस हड़ताल ने दुनियाभर का ध्यान अपनी ओर खींचा था. ऐसा दबाव बना किजार निकोलस द्वितीय को गद्दी छोड़नी पड़ी थी. इसके बाद बनी अस्थायी सरकार ने महिलाओं को वोट डालने का अधिकार दिया. यह महिलाओं की बहुत बड़ी जीत थी.

जब पहली बार मना अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

जेटकिन की मुहिम रंग लगाई. 1911 में पहली बार जर्मनी, ऑस्ट्रिया, स्विटजरलैंड में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया. हालांकि इसे औपचारिक मान्यता 1955 में तब मिली जब संयुक्त राष्ट्र ने इसे मनाना शुरू किया. 1996 में पहली बार इसके लिए थीम तैयार की गई. इसके बाद हर साल इस खास दिन के लिए थीम रखी जाने लगी. इस साल अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की थीम है– महिलाओं में निवेश करें – प्रगति में तेजी लाएं. जेटकिन ने जब महिलाओं के सामने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की बात रखी तो उस समय किसी खास तारीख का जिक्र नहीं किया गया था. शुरुआती दौर में इसे फरवरी के पहले रविवार को मनाने की परंपरा शुरू की गई. हालांकि बाद में संयुक्त राष्ट्र ने इसके लिए 8 मार्च की तारीख तय की. इसके बाद से यही तारीख अंतरराष्ट्रीय महिला के दिवस तौर पर दुनियाभर में सेलिब्रेट की जा रही है.

सदियों से नारी को एक वस्तु तथा पुरुष की संपत्ति समझा जाता रहा है। पुरुष नारी को पीट सकता है, उसके मनोबल को तोड़कर रख सकता है, साथ ही उसकी जान भी ले सकता है। मानो कि उसे नारी के साथ यह सब करने का अघोषित अधिकार मिला हुआ है। मगर यह भी सच है कि अनेक नारियों ने हर प्रकार की विपरीत और कठिन परिस्थितियों का डटकर सामना करते हुए उन पर विजय प्राप्त की और इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया। आज की बदली हुई परिस्थितियों में नारियां स्वयं को बदलने और पुरुष-प्रधान समाज द्वारा रचित बेड़ियों से स्वयं को आजाद करवाने हेतु कृतसंकल्प हैं। अब प्रश्न यह है कि नारी कितना बदले और क्यों?

समानता की दिशा में एक मजबूत संदेश देता है महिला दिवस

हर साल 8 मार्च को पूरी दुनिया में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। वर्ष 2026 में भी महिला दिवस 8 मार्च, रविवार को ही मनाया जा रहा है। यह दिन महिलाओं की उपलब्धियों, संघर्षों और समाज में उनके अमूल्य योगदान को सम्मान देने के लिए समर्पित है। महिला दिवस केवल एक तारीख नहीं, बल्कि समानता की दिशा में एक मजबूत संदेश है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि जब महिलाओं को अवसर मिलता है, तो समाज और देश दोनों प्रगति करते हैं। महिला दिवस की शुरुआत 20वीं सदी की शुरुआत में हुई, जब महिलाओं ने अपने अधिकारों बेहतर वेतन, सुरक्षित कार्यस्थल और मतदान के अधिकार के लिए आवाज उठाई।

- 1908 : न्यूयॉर्क में हजारों महिलाओं ने काम के घंटे कम करने और बेहतर वेतन की मांग की।
- 1910 : क्लारा जेटकिन ने कोपेनहेगन सम्मेलन में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा।
- 1911 : पहली बार कई यूरोपीय देशों में महिला दिवस मनाया गया।
- 1975 : संयुक्त राष्ट्र ने आधिकारिक रूप से 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मान्यता दी।

तब से यह दिन वैश्विक स्तर पर महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता का प्रतीक बन चुका है।

8 मार्च को ही क्यों मनाते हैं अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस?

अमेरिका में कामकाजी महिलाओं ने 8 मार्च को अपने अधिकारों को लेकर आंदोलन करते हुए मार्च निकाला था। जिसके बाद सोशलिस्ट पार्टी ने इस दिन महिला दिवस मनाने का एलान किया। वहीं 1917 में पहले विश्व युद्ध के दौरान रूस की महिलाओं ने ब्रेड और पीस के लिए हड़ताल किया। परिणाम स्वरूप सम्राट निकोलस ने अपना पद त्याग दिया और महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला। ये देख यूरोप की महिलाओं ने भी कुछ दिन बाद 8 मार्च को पीस ऐक्टिविस्ट्स का समर्थन करते हुए रैलियां निकाली। इस कारण 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मान्यता मिला। बाद में 1975 में संयुक्त राष्ट्र ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को मान्यता दे दी।

महिला दिवस का महत्व

- महिला दिवस केवल उत्सव नहीं, बल्कि जागरूकता का दिन है। इसका उद्देश्य है,
- लैंगिक समानता को बढ़ावा देना
- शिक्षा और रोजगार में समान अवसर की मांग
- महिलाओं के स्वास्थ्य और सुरक्षा पर ध्यान
- समाज में महिलाओं की उपलब्धियों का सम्मान
- आज महिलाएं राजनीति, विज्ञान, खेल, कला और व्यापार हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। यह दिन उनके संघर्ष और सफलता की कहानी को सम्मान देने का अवसर है।

महिला दिवस 2026 की थीम

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026 की वैश्विक थीम है, 'दान से लाभ' यानी जब आप किसी को कुछ देते हैं तो बदले में आपको भी लाभ होता है।

महिला दिवस से जुड़े रोचक तथ्य

- दुनिया के 100 से अधिक देशों में 8 मार्च को कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।
- कई देशों में यह दिन आधिकारिक अवकाश भी होता है।
- हर साल अलग थीम तय की जाती है, जो उस वर्ष के सामाजिक मुद्दों को दर्शाती है।
- महिला दिवस का रंग अक्सर बैंगनी माना जाता है, जो गरिमा और न्याय का प्रतीक है।

बहन, पत्नी, बेटी और मां के तौर पर आपके जीवन में भी ऐसी कुछ महिलाएं होंगी जिन्होंने आपके जीवन के लिए काफी कुछ किया होगा. ऐसी खास महिलाओं को महिला दिवस के दिन आप भी बेहद खास फील करवा सकते है.

इस खास मौके पर गृह लक्ष्मी को दें ये स्पेशल गिफ्ट

कहा जाता है कि जब एक पुरुष शिक्षित होता है तो सिर्फ एक व्यक्ति शिक्षित होता है, लेकिन जब एक स्त्री शिक्षित होती है, तो एक पीढ़ी शिक्षित होती है. बच्चे को जन्म देने से लेकर उसमें संस्कार के बीज डालने और उसके व्यक्तित्व का निर्माण करने तक, एक महिला का बहुत बड़ा रोल होता है. यही वजह है कि एक स्त्री की भूमिका परिवार तक ही सीमित नहीं मानी जाती, बल्कि पूरे समाज के निर्माण में उसका अहम रोल होता है.

वही आज के समय में तो महिला परिवार को भी संभालती है और हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर भी चलती है. अपने प्रेम, सेवाभाव और कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए महिला परिवार के सभी लोगों को आपस में जोड़कर रखती है और मकान को घर बनाती है. इन कारणों से ही भारतीय समाज में स्त्रियों को लक्ष्मी कहा जाता है. आपके भी घर में भी बहन, पत्नी, बेटी और मां के तौर पर ऐसी गृह लक्ष्मी होंगी. इस बार 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर अपने जीवन की इन खास महिलाओं को कुछ ऐसे गिफ्ट्स दें, जो उनके फाइनेंशियल फ्यूचर ब्राइट करें और दिल से उन्हें शुक्रिया कहें.

सुकन्या समृद्धि स्कीम

अगर आप एक बेटी के पिता हैं और बेटी की उम्र 10 साल से कम है, तो आप उसके लिए सुकन्या समृद्धि स्कीम को महिला दिवस के दिन शुरू करवा सकते हैं. इस स्कीम में सालाना कम से कम 250 और अधिक से अधिक 1.5 लाख रुपए तक जमा किए जा सकते हैं. आप अपनी जेब के हिसाब से इतना पैसा हर साल उसके लिए जमा कर सकते हैं, जिससे उसके बड़े होने तक एक बड़ी राशि जमा हो जाए. इस स्कीम में 15 सालों तक निवेश करना होता है और 21 साल में ये मैच्योर होती है. इस स्कीम के जरिए बेटी के नाम से जमा रकम को आप उसकी हायर स्टडीज या शादी वगैरह में खर्च कर सकते हैं. मौजूदा समय में इस स्कीम पर 8.2 फीसदी ब्याज मिल रहा है.

एफडी

अगर आप एकमुश्त रकम खर्च कर सकते हैं, तो एक निश्चित अमाउंट की एफडी भी आप अपने जीवन की खास महिला के नाम से फिक्स कर सकते हैं. महिलाओं के लिए सरकार की ओर से महिला सम्मान बचत प्रमाण पत्र योजना भी चलाई जाती है. इसमें 7.5 फीसदी के हिसाब से ब्याज दिया जाता है. आप चाहें तो दो साल के लिए इस स्कीम में उनके नाम से रकम फिक्स करवा सकते हैं. मैच्योर होने के के बाद इस रकम को वो महिलाएं अपनी जरूरत के हिसाब से खर्च कर सकती हैं.

एसआईपी

परिवार की महिला को आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिए आप महिला दिवस के दिन उनके लिए एसआईपी भी शुरू कर सकते हैं. एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश किया जाता है. इसमें आप 500 रुपए से भी निवेश कर सकते हैं. एसआईपी पर कंपाउंडिंग का फायदा मिलने के साथ ब्याज अच्छा मिल जाता है. लंबे समय की एसआईपी में औसत रिटर्न 12 फीसदी माना जाता है. ऐसे में इस स्कीम के जरिए उनके फ्यूचर के लिए अच्छा खासा अमाउंट इकट्ठा कर सकते हैं.

सोने की ज्वेलरी

अगर आप इस तरह का कोई गिफ्ट नहीं देना चाहते तो अपने जीवन की खास महिला के लिए सोने की कोई ज्वेलरी भी खरीद कर उन्हें गिफ्ट कर सकते हैं. महिलाएं हमेशा गहनों की शौकीन होती है. इसके अलावा सोने का गहना सिर्फ श्रृंगार तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि ये एक जमा पूंजी की तरह है, जिसकी कीमत समय के साथ बढ़ती रहती है. मुश्किल समय में इन गहनों की मदद से पैसों का इंतजाम किया जा सकता है. ऐसे में आप परिवार की गृह लक्ष्मी को गहने गिफ्ट करके उन्हें खुश कर सकते हैं.

एलआईसी पॉलिसी

एलआईसी आधार शिला स्कीम वगैरह ऐसी तमाम स्कीम्स हैं जो खासतौर पर महिलाओं के लिए तैयार की गई हैं. ऐसे में आप उनकी उम्र और जरूरत के हिसाब से एलआईसी की किसी स्कीम को उनके लिए खरीद सकते हैं और महिला दिवस के दिन उन्हें गिफ्ट में दे सकते हैं. इसमें हर महीने आप ही प्रीमियम भरें. मैच्योरिटी के बाद जब एकमुश्त अमाउंट उनके हाथ आएगा तो वे बहुत खुश होंगी और भविष्य में इस रकम को अपने लिए या परिवार के लिए अपनी मर्जी से इस्तेमाल कर सकेंगी.

सिर्फ एक दिन ही क्यों हो सम्मान...?

हर साल महिला दिवस के नाम पर एक दिवस आता है और हम खुद को समूचा उड़ेल देते हैं, नारों, भाषणों, सेमिनारों और आलेखों में। बड़े-बड़े दावे, बड़ी-बड़ी बातें, बड़ी-बड़ी कल्पनाएं। लेकिन इन बड़ी बातों के पीछे का यथार्थ इतना क्रूर, कि एक कोई घटना तमाचे की तरह गाल पर पड़ती है और हम फिर बेबस, असहाय, अकिंचन से हो जाते हैं। महिला दिवस हम सभी का अस्मिता दिवस है। उन जुझारू और जीवट महिलाओं की स्मृति में मनाया जाने वाला जो काम के घंटे कम किए जाने के लिए संघर्ष करती हुई शहीद हो गई।

हर साल 8 मार्च को महिला दिवस मनाया जाता है। मैं कहती हूं कि विश्वभर को महिला दिवस मनाने की आवश्यकता ही नहीं है। ऐसा नहीं है कि हमारे देश में देवी की पूजा नहीं होती है। भारत में कई रूपों में देवियों का पूजन किया जाता है। देवी दुर्गा, माता पार्वती, मां भगवती, मां बगलामुखी, माता कालिका या फिर अन्य कई देवियों का पूजन ही क्यों न हो? हमारा देश देवी को पूजता भी है और हमारे सम्माननीय नारियों और देवियों के लिए नतमस्तक भी है। लेकिन फिर भी हमें महिला दिवस नहीं मनाना चाहिए, क्योंकि जहां मां, पुत्री, बेटी, लड़की, महिला या स्त्री के शील धर्म की रक्षा नहीं की जा सकती, वहां महज एक दिन महिलाओं के प्रति वफादारी दिखाने का क्या औचित्य है?

बात सिर्फ इतनी ही नहीं है, जहां गर्भ में आते ही बेटियों को मार दिया जाता है, वो तो इस सबसे ऊपर बहुत अधिक भयावह और लज्जित होने वाली बात है। हमें इस बात के प्रति सजग होते हुए गर्भ में पल रहीं बेटियों की रक्षा करनी चाहिए ताकि आने वाले समय में भारत कहीं बेटियों के स्नेह और प्यार से वंचित न रह जाएं।

8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस आते ही सिर्फ एक दिन के लिए महिलाओं का गुणगान करके उन्हें सम्मान देना और दूसरी ओर उनको छलना, उनके साथ कपट भाव रखना, रास्ते चलते छेड़छाड़ करना, स्त्री को लज्जित करना, शराब पीकर महिलाओं के साथ मारपीट करना. यह सब हमें शोभा नहीं देता। इससे अच्छा यही होगा कि हम महिला दिवस मनाना ही भूल जाएं। अगर सच में हमारे मन में महिलाओं के प्रति आदर और सम्मान है, तो सबसे पहले हमें चाहिए कि हम उन मां, बहन, बेटियों, बहुओं और उन मासूम बच्चियों के प्रति अपना नजरिया बदलें और उन्हें हीन दृष्टि से देखना बंद करें। पराए घर की किसी महिला या लड़की को हम हमारी घर की बेटी समझकर उन्हें भी उसी नजरिए देखें, जो नजरिया हम अपनी मां और बहनों के लिए रखते करते हैं। महिला दिवस मनाने का केवल यह मतलब नहीं है कि एक दिन तो बहुत ऊंचे स्थान पर बैठाकर मान-सम्मान दे दिया जाए और दूसरे ही दिन राह चलती लड़कियों से छेड़खानी शुरू कर दी जाए। यहां युवा तो युवा, बुजुर्ग भी इन मामलों में पीछे नहीं हैं। रास्ते चलते लड़कियों पर फब्तियां कसना इनकी आदत शुमार में है और सबसे ज्यादा शर्मनाक बात तो तब हो जाती है, जब हैवानों का दल 3-5 साल की मासूम बच्चियों को भी अपना निशाना बनाने में नहीं चूकते और मौका देखते ही उनका शीलहरण करके उन्हें नारकीय जीवन में पहुंचा देते हैं।

कभी टॉफी का लालच देकर तो कभी अन्य बहानों से बहला-फुसलाकर अपने गंदे नापाक इरादों को उन मासूमों पर थोप दिया जाता है। चाहे वो फिर अपने पड़ोसी की जान-पहचान की बच्ची हो या फिर कोई और.उन्हें इस कदर रौंद दिया जाता है कि वे न जीने लायक बचती है और न ही समाज में अपना मुंह किसी को दिखाने लायक। हमारे प्रोफेशनल समाज को चाहिए कि वह इस तरह दरिंदगी का शिकार हुई बच्चियों और महिलाओं के प्रति अपना नजरिया बदले और उन्हें अपने घरों में बेटी या बहूओं का स्थान देने की पहल करें।

महिला दिवस सिर्फ एक दिन मनाकर अपने कर्तव्य से इतिश्री न करें, महिला के मान-सम्मान के प्रति हर दिवस, हर पल सजग रहें ताकि किसी भी घर की बेटी, बहू या और कोई भी हो उसके साथ कुछ भी, कहीं भी गलत न हो सके। इसके लिए पुरुषों को इस मामले में ठोस कदम उठाना चाहिए, क्योंकि नारी सम्मान की बात घर से ही शुरू की जानी चाहिए ताकि बाकी भी इस सम्मान को बरकरार रखने में पूरी तरह सहयोग दे सकें। आज महिलाएं, युवतियां घर की चहारदीवारी से बाहर निकलकर हर क्षेत्र में जहां अपना परचम बखूबी लहरा रही हैं, वहीं अगर पुरुष वर्ग भी उनके प्रति अपना नजरिया बदल देंगे तो निश्चित ही भारत की हर बेटी-बहू का मान-सम्मान, इज्जत-आबरू की रक्षा होगी।

युवाओं के साथ काम कर खुद को जवान महसूस करता हूं

नेटफ्लिक्स के कार्यक्रम में वेब सीरीज 'फैमिली बिजनेस' की स्टार कास्ट ने शिरकत की। इस दौरान अभिनेता विजय वर्मा और अनिल कपूर ने फिल्म के कलाकारों और टीम की तारीफ की। अभिनेता विजय वर्मा ने कार्यक्रम के दौरान अपनी खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा, 'यह मेरे लिए बहुत खास है। मुझे अपने फेवरेट डायरेक्टर हंसल मेहता के साथ पहली बार काम करने का मौका मिला है। हंसल ने कमाल का काम किया है। उनका काम करने का तरीका बिल्कुल लेटेस्ट है। इस सीरीज में मेरा किरदार बेहद शानदार है। इसमें मैंने पहली बार विक्रम के साथ काम किया है और अनिल तो एवरग्रीन है ही। हमेशा उदार, सबसे डैशिंग, सबसे शानदार और सबसे कम उम्र के एक्टर जिनके साथ मैंने काम किया। उनकी एनर्जी और काम के प्रति जोश देखकर मजा आता है। रिया और नंदीश के साथ भी पहली बार शूटिंग की और बहुत मस्ती हुई। इस प्रोजेक्ट में कई 'पहली बार' वाली चीजें हुईं। अभिनेता अनिल कपूर ने भी अपनी खुशी जाहिर की। सबसे पहले उन्होंने शो की होस्ट जॉनी लिवर की बेटी जैमी लिवर के काम की तारीफ की। उन्होंने कहा, 'जैमी, मैं आपका बहुत बड़ा फैन हूं। याद है, मैंने आपको सबसे पहले कॉल किया था, जब आपने करियर भी शुरू नहीं किया था।' इसके बाद अभिनेता ने टीम की सराहना करते हुए कहा, 'यहां मौजूद सभी लोग, विजय, हंसल, विक्रम, प्रोड्यूसर, मेरा पुराना दोस्त आकाश और बाकी सभी कलाकार। आप सभी के साथ काम करके बहुत मजा आया। ये सभी युवा कलाकार मुझे कड़ी टक्कर दे रहे हैं। जैसा कि मैं कहता हूं, मेरा मुकाबला बढ़ रहा है। इनके साथ मुकाबला करके मैं खुद को जवान महसूस करता हूं। आप सभी युवाओं के साथ काम करके बहुत अच्छा लगता है।'

अदिति राव हैदरी ने बताई बॉलीवुड से दूरी की वजह

एक्ट्रेस अदिति राव हैदरी हाल ही में 'गांधी टॉक्स' में विजय सेतुपति के अपोजिट नजर आईं। अमर उजाला से खास बातचीत में उन्होंने बताया कि यह साइलेंट फिल्म उनके लिए कितनी खास थी? बातचीत के दौरान अदिति ने आर्ट फिल्मों की किस्मत पर बात की। साथ ही बीते कुछ साल में हिंदी फिल्मों में कम काम करने का कारण भी खुलकर बताया।

गांधी टॉक्स के लिए हामी भरने की सबसे बड़ी वजह क्या रही?

मेरा हमेशा से सपना रहा कि मैं किसी मूक फिल्म में काम करूं। जब गांधी टॉक्स मेरे पास आई, तो मैं सच में बेहद खुश हुई। फिल्म की टीम ने इसे और भी दिलचस्प बना दिया। जिस तरह किशोर (निर्देशक) ने इसका ढांचा बनाया, रहमान ने शानदार संगीत दिया और विजय सेतुपति, अरविंद स्वामी व सिद्धार्थ जाधव जैसे बेहतरीन कलाकार मिले। सबने मिलकर इस फिल्म को खास बना दिया। इसके अलावा मेरे किरदार को लेकर किशोर ने साफ कहा था कि यह सिर्फ एक लव इंटरेस्ट तक सीमित नहीं है, बल्कि कहानी का भावनात्मक हिस्सा भी है।

एक मूक फिल्म में अभिनय करना कितना मुश्किल होता है?

एक्टर होने के नाते हर फिल्म अपने आप में चुनौती होती है पर मूक फिल्म की चुनौतियां थोड़ी अलग ही होती हैं। इसमें संवाद ही नहीं होते। सब कुछ आपकी बॉडी लैंग्वेज, आपकी आखों और भीतर क्या महसूस हो रहा है उस पर निर्भर करता है। बिन कुछ कहे अपनी भावनाएं दिखाने की यह प्रक्रिया मुझे बहुत पसंद है।

आज का दर्शक प्रयोगात्मक फिल्में देखता है? या फिर जज करते हुए आगे बढ़ जाता है?

यह सच है कि मूक फिल्म कई लोगों के लिए नई चीज है, इसलिए इसकी पेस थोड़ी धीमी है। दुर्भाग्य से, हम फिल्मों को थिएटर में बढ़ने ही नहीं देते क्योंकि हम शुक्रवार के अंत तक ही फिल्म की किस्मत का फैसला कर देते हैं। सच तो यह है कि ऐसी फिल्मों को समय चाहिए। इन्हें ध्यान देकर महसूस करना पड़ता है।

चार साल में हमने आपको ज्यादा हिंदी फिल्मों में नहीं देखा। क्या वजह रही?

बात बस इतनी सी है कि अगर मुझे अच्छा काम मिलेगा तो ही मैं हिंदी फिल्में करूंगी। सच्चाई यह है कि हम जैसे लोग जो बाहर से बॉलीवुड में आते हैं, हमें हर फिल्म के साथ बॉलीवुड में खुद को साबित करना पड़ता है और मैं यह बिना किसी शिकायत या नकारात्मकता के कह रही हूं। ऐसा कभी नहीं होता कि हमने पांच फिल्मों के कॉन्ट्रैक्ट साइन कर लिए हों। हमें हर नई फिल्म में खुद को फिर से प्रूव करना पड़ता है। मैं 2011 से काम कर रही हूं और मेरा मानना है कि टैलेंट अपना रास्ता खुद बना लेता है। बाकी मैं खुशकिस्मत हूं कि मुझे देश के कई शानदार निर्देशकों के साथ काम करने का मौका मिला।

नीरज पांडे और मनोज बाजपेयी के साथ काम करने पर बोले अक्षय

भारतीय सिनेमा में जब किसी अभिनेता को बड़े फिल्मकारों और कलाकारों के साथ काम करने का मौका मिलता है, तो वह अनुभव उनके करियर को बदलने वाला साबित होता है। इस कड़ी में अभिनेता अक्षय ओबेरॉय को नीरज पांडे-रितेश शाह के निर्देशन और एक्टर मनोज बाजपेयी के साथ एक प्रोजेक्ट पर काम करने का अवसर मिला, जो उनके लिए सीखने और प्रेरणा लेने वाली यात्रा बन गई। आईएएनएस को दिए इंटरव्यू में उन्होंने अनुभवों को साझा किया। आईएएनएस से बात करते हुए अक्षय ओबेरॉय ने कहा, ''नीरज पांडे के साथ काम करना मेरे करियर के सबसे यादगार अनुभवों में से एक रहा है। वह जिस जॉनर में फिल्म बनाते हैं, उसमें उनकी पकड़ और समझ अनोखी है। सेट पर हर दिन उनके साथ काम करना किसी मास्टरक्लास से कम नहीं होता। उनकी सटीकता, कहानी पर पकड़ और विजुअल बनाने का तरीका मुझे लगातार सीखने का अवसर देता रहा है। मेरा मानना है कि इस फिल्म ने मुझे एक बेहतर अभिनेता बनने में मदद की है और मेरी कला को और निखारा है।'' फिल्म के निर्देशक रितेश शाह को लेकर अक्षय ने कहा, ''उनके काम की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वह किरदारों और भावनाओं को गहराई से समझते हैं। उनके निर्देशन में हर सीन में एक वास्तविकता और वजन आता है। मैंने उनके साथ काम करते हुए हर सीन को अधिक संवेदनशील और प्रभावशाली ढंग से निभाने की कला सीखी। यह अनुभव मेरे लिए चुनौतीपूर्ण होने के साथ-साथ बेहद संतोषजनक भी रहा।'' मनोज बाजपेयी के साथ स्क्रीन साझा करने के अनुभव को भी अक्षय ने प्रेरणा स्रोत बताया। उन्होंने कहा, ''मनोज बाजपेयी सिर्फ एक अभिनेता नहीं, बल्कि एक पूरी संस्था हैं। उनकी मेहनत, अनुशासन और काम के प्रति जुनून पूरी टीम को प्रभावित करता है। ऐसे कलाकारों के साथ काम करना मेरे लिए सीखने और खुद को बेहतर बनाने का अवसर रहा। इस अनुभव के लिए मैं खुद को बेहद भाग्यशाली मानता हूं। मेरा दर्शकों से आग्रह है कि वह इस फिल्म को देखें और अभिनय का आनंद ले।'' अक्षय ओबेरॉय जल्द ही फिल्म 'टॉक्सिक' में भी नजर आने वाले हैं। इस फिल्म में यश मुख्य भूमिका में हैं। इसमें कियारा आडवाणी, नयनतारा, हुमा कुरैशी, रुक्मिणी वसंत और तारा सुतारिया भी अहम किरदार निभा रही हैं। फिल्म को गीतू मोहनदास ने निर्देशित किया है और इसे कन्नड़ और अंग्रेजी में एक साथ शूट किया गया है। इसके अलावा, इसे हिंदी, तमिल, तेलुगु, मलयालम और कई अन्य भाषाओं में डब करने की योजना है। 'टॉक्सिक: ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स' 19 मार्च को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

भूमि पेडनेकर की 'दलदल' बनी ग्लोबल ओटीटी हिट

भूमि पेडनेकर कभी भी तयशुदा फॉर्मूले पर चलने वाली कलाकार नहीं रही हैं। उनकी फिल्मोग्राफी साफ दिखाती है कि वह ग्लैमर और जरूरत से ज्यादा ड्रामा से दूर, अलग और दमदार कहानियों को चुनती हैं। अपनी पहली फिल्म से ही भूमि ने दम लगा के हईशा, टॉयलेट : एक प्रेम कथा, पति पत्नी और वो, बधाई दो, थैंक यू फॉर कमिंग, शुभ मंगल सावधान, बाला, भीड़, भक्षक, सांड की आंख जैसी फिल्मों के जरिए समाज से जुड़े मुद्दों पर बात करने की हिम्मत दिखाई है। अब उनकी ग्लोबल ओटीटी हिट सीरीज दलदल भी इसी कड़ी का हिस्सा है। भूमि की फिल्मों और शोज में दिखावा कम और कंटेंट ज्यादा होता है। यही वजह है कि दर्शक उनकी कहानियों से जुड़ते हैं और बार-बार उन्हें देखना चाहते हैं। दलदल के ओटीटी हिट बनने के साथ भूमि ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि उनके लिए माध्यम नहीं, बल्कि कला और अभिनय सबसे जरूरी है। बड़े पर्दे पर अपनी मजबूत पहचान बनाने के बाद, भूमि ने अमेजन प्राइम की टॉप-ट्रेंडिंग साइकोलॉजिकल क्राइम थ्रिलर दलदल के साथ डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी अपनी पकड़ साबित की है। यह सीरीज अमेरिका, यूके, यूएई समेत कई देशों में ट्रेंड कर रही है और दुनियाभर में सराही जा रही है। इसकी सफलता भूमि की बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाती है और उन्हें भारत की सबसे भरोसेमंद और निडर अभिनेत्रियों में शामिल करती है। दलदल को मिल रही वैश्विक सराहना यह भी दिखाती है कि भूमि हमेशा कंटेंट और चुनौतीपूर्ण भूमिकाओं को प्राथमिकता देती हैं। जहां कई कलाकार ऐसे किरदारों से हिचकते हैं जिनमें शारीरिक बदलाव, गहरी भावनात्मक तैयारी और व्यक्तित्व में बदलाव की जरूरत होती है, वहीं भूमि ने इन्हें अपनी ताकत बना लिया है। सिनेमाघरों से लेकर दुनियाभर के स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म तक, भूमि ऐसा काम कर रही हैं जो खुद बोलता है। दलदल की सफलता के साथ यह साफ है कि भूमि सतीश पेडनेकर हर बार बड़ा जोखिम लेती हैं और उसे पूरी मजबूती से निभाती हैं।

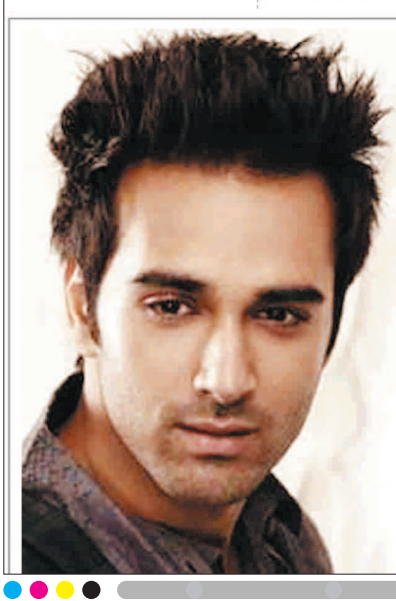

ओवरनाइट ऑडिशन से ओवरनाइट स्टारडम ने कैसे बदली पुलकित सम्राट की ज़िंदगी

भारतीय टेलीविज़न में ओवरनाइट सक्सेस बहुत कम लोगों को मिलती है और उन्हीं बेहद कम लोगों में एक नाम पुलकित सम्राट का भी शामिल है। जी हाँ, एक साधारण से टीवी ऑडिशन, जिसे उन्होंने थोड़ी हिचकिचाहट के साथ स्वीकार किया था, वही आगे चलकर ना सिर्फ़ उनकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा मोड़ साबित हुआ, बल्कि उसी ने उन्हें हर घर का चहिता चेहरा भी बना दिया।

खुद को वर्सेटाइल एक्टर के तौर पर देखनेवाले पुलकित सम्राट अपने करियर की शुरुआत टीवी नहीं करना चाहते थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि डेली सोप्स ज़्यादातर मेलोड्रामा तक ही सीमित रहते हैं। लेकिन शायद किस्मत को कुछ और मंज़ूर था और उसी ने उन्हें लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचा दिया। इस सिलसिले में पुलकित सम्राट कहते हैं, 'मुझे याद है मैंने साफ कहा था कि मैं टीवी सीरियल टाइप का काम नहीं करना चाहता, बल्कि मैं कुछ अलग और वर्सेटाइल करना चाहता था। लेकिन फिर कास्टिंग टीम ने मुझे समझाया कि यह किरदार बाकी टीवी रोल्स से अलग है। इसमें गहराई के साथ कुछ नया करने का मौका था और सबसे अहम बात यह थी कि मुझे एकता कपूर से मिलने का अवसर मिलने वाला था। इसी बात ने मुझे मुंबई आने के लिए राजी कर लिया और मैं रातों-रात दिल्ली से मुंबई आ गया।' गौरतलब है कि एकता कपूर पहले ही पुलकित की तस्वीरें देख चुकी थीं और उनसे मुलाकात के बाद वे निश्चिंत हो चुकी थी कि उनके सीरियल 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' के लक्ष्य वीरानी वही होंगे। ऐसे में मुंबई आते ही उनकी ग्रूमिंग शुरू हुई। उन्हें नया हेयरकट दिया गया और स्क्रीन टेस्ट कराया गया और फुटेज देखते ही उनके नाम पर मोहर लगाते हुए एकता कपूर ने कहा, 'ओके, डन। रेडी।' हालांकि इस बड़ी सफलता के बीच भी पुलकित को रह-रहकर अपना परिवार याद आ रहा था, जिन्हें वे बिना बताए दिल्ली छोड़कर मुंबई चले आए थे। उनसे मिलने की तड़प और अपनी कामयाबी की खबर देने के लिए उन्होंने पीठ दर्द का बहाना बनाते हुए एक रात के लिए दिल्ली लौटने की इजाजत मांगी और पहुँच गए अपने पैरेंट्स से मिलने। दिल्ली एयरपोर्ट पर अपने पैरेंट्स को देखते ही वे भावुक हो उठे। उस घटना को याद करते हुए पुलकित बताते हैं, 'आंखों में आंसू लिए मैं उनके गले लगा। शब्द बहुत काम थे, बस थी तो भावनाएं। हालांकि कुछ ही घंटों बाद मैं फिर से मुंबई लौट आया लेकिन इस बार एक नए आत्मविश्वास और बदली हुई ज़िंदगी के साथ लौटा था।'

'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में पुलकित की एंट्री बेहद खास रही थी। शो की जेनरेशन लीप के साथ उन्हें लॉन्च किया गया था और वे 'वो कृष्णा है' गीत के साथ सीधे दर्शकों के दिलों में उतर गए। गौर करनेवाली बात ये थी है कि यह किसी टीवी किरदार के लिए बनाए गए शुरुआती फुल-लेंथ लॉन्च सॉन्ग्स में से एक था। और इस तरह मौनी रॉय के साथ मिलकर वह नई पीढ़ी का चेहरा बने। इस सिलसिले में पुलकित कहते हैं, 'रातों-रात मैं एक जाना-पहचाना नाम बन चुका था और फिर उसके बाद मैंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

'ग्लोरी' से ओटीटी प्लेटफॉर्म पर कदम रखने जा रहे हैं पुलकित

'फुकरे' की लोकप्रियता के बाद 'तैश', 'सनम रे' और 'राहु केतु' में अलग-अलग तरह के किरदार निभाते हुए फिलहाल वे 'ग्लोरी' से न सिर्फ ओटीटी प्लेटफॉर्म पर कदम रखने जा रहे हैं, बल्कि पहली बार बॉक्सर का किरदार निभाते हुए अपने करियर को लगातार आगे बढ़ा रहे हैं। फिलहाल पुलकित सम्राट की यह कहानी बताती है कि कभी-कभी एक सही मौका पूरी ज़िंदगी बदल देता है, लेकिन उस मौके को आगे ले जाने के लिए मेहनत, धैर्य और सही फैसले सबसे जरूरी होते हैं।

स्वच्छता का संदेश देने मंदिर परिसर झिरना में युवा कांग्रेस का व्हाइट टी-शर्ट मूवमेंट

नई दृष्टिबिंदु / कवर्धा

भारतीय युवा कांग्रेस विधानसभा कवर्धा द्वारा ग्राम झिरना के धार्मिक मेला स्थल में व्हाइट शर्ट मूवमेंट कार्यक्रम का आयोजन युवा कांग्रेस विधानसभा कवर्धा अध्यक्ष वाल्मिकी वर्मा के अगुवाई में किया। ग्राम झिरना का यह धार्मिक स्थल क्षेत्र की आस्था का प्रमुख केंद्र है, जहां प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मेला आयोजित किया गया। मेले में दूर-दूर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे, मेले के पश्चात परिसर में जगह-जगह कचरा और गंदगी फैल गई थी, जिसे देखते हुए भारतीय युवा कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने स्वयं पहल करते हुए स्वच्छता अभियान चलाने का निर्णय लिया।

इस अवसर पर युवा कांग्रेस और क्षेत्रीय कार्यकर्ता झिरना स्थित मंदिर परिसर को झाड़ू लगाकर और कचरा एकत्रित कर पूरे परिसर को स्वच्छ बनाने का प्रयास किया तथा स्वच्छता का संदेश आमजन तक पहुंचाया। जनपद सदस्य प्रतिनिधि वाल्मिकी वर्मा ने कहा कि झिरना मंदिर परिसर धार्मिक मेला स्थल में व्हाइट शर्ट मूवमेंट के माध्यम से लोगों को यह संदेश देने का प्रयास किया जा रहा है, स्वच्छता केवल एक अभियान नहीं बल्कि हमारी जिम्मेदारी और संस्कार का हिस्सा होना चाहिए। उन्होंने कहा कि झिरना धार्मिक स्थल हमारे क्षेत्र की आस्था और श्रद्धा का प्रतीक है, इसलिए इसकी स्वच्छता बनाए रखना हम सभी का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि व्हाइट शर्ट मूवमेंट के माध्यम से युवा कांग्रेस समाज में सकारात्मक संदेश देने और लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने का कार्य कर रही है।

युवा कांग्रेस कवर्धा समन्वयक अश्वनी वर्मा ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान कार्यकर्ताओं ने लोगों से अपील की कि वे स्वच्छता को अपनी आदत बनाएं और समाज में जागरूकता फैलाने में सहयोग करें। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने स्थानीय लोगों के साथ मिलकर धार्मिक स्थल के आसपास के मार्ग, मेला स्थल और मंदिर परिसर को साफ सफाई किया गया। समाज में स्वच्छता को लेकर जागरूकता बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जब समाज का हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझेगा, तभी स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण का निर्माण संभव होगा।

स्थानीय नागरिकों ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों से युवाओं में सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है और समाज में सकारात्मक बदलाव आता है। कार्यक्रम में युवा कांग्रेस के कई कार्यकर्ता, सामाजिक कार्यकर्ता तथा ग्रामवासी सक्रिय रूप से शामिल हुए और सभी ने मिलकर स्वच्छता अभियान को सफल बनाया। अंत में सभी ने यह संकल्प लिया कि भविष्य में भी ऐसे जनजागरूकता कार्यक्रम लगातार आयोजित किए जाएंगे, ताकि स्वच्छता का संदेश समाज के हर वर्ग तक पहुंच सके और क्षेत्र को स्वच्छ व सुंदर बनाया जा सके। उक्त कार्यक्रम में प्रमुख रूप से कवर्धा शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अशोक सिंह ठाकुर, संजय ध्रुर्वे, रामगोपाल वर्मा, मनोज चंद्रवंशी, सुंदर चंद्रवंशी, ग्राम पटेल भोगेश्वर चंद्रवंशी, रिषभ वैष्णव, आनंद चंद्रवंशी, गिरधर लहरे, मोहन सोनवानी, शिवा, बंजारे, पप्पू चंद्रवंशी, सुखनंदन चंद्रवंशी, राजा चंद्रवंशी, ज्ञानू कश्यप, विष्णु चंद्रवंशी, मंत्री साहू, बलराम साहू, नंद चंद्रवंशी, जीतराम चंद्रवंशी, सोनू चंद्रवंशी, प्रमोद योगी, धनंजय चंद्रवंशी, बिरेन्द्र चंद्रवंशी, चंद्रशेखर जायसवाल, लोरिक यादव, अजय पात्रे, जित्तू यादव, ज्ञानेंद्र चंद्रवंशी, रामकिंकर वर्मा, हेमंत वर्मा, देवीलाल ध्रुर्वे, सुशील चंद्रवंशी, इंद्रकुमार ध्रुर्वे, देवराज ध्रुर्वे, जेठूराम ध्रुर्वे, नीलकंठ निषाद सहित आसपास के ग्रामीण उपस्थित रहे।

नाबालिग को प्रेमजाल में फंसाकर भगाया, फिर करता रहा दुष्कर्म

कवर्धा/कबीरधाम। कबीरधाम जिले में नाबालिग को बहला-फुसलाकर भगाने और उसके साथ कई बार दुष्कर्म करने वाले आरोपी को पुलिस ने आखिरकार गिरफ्तार कर लिया है। थाना तरेगांव जंगल पुलिस की कार्रवाई में पकड़े गए आरोपी को न्यायालय में पेश कर न्यायिक रिमांड पर भेज दिया गया है। मिली जानकारी के अनुसार, प्रार्थी ने थाना तरेगांव जंगल में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि उसकी नाबालिग पुत्री 25 जून 2025 की रात करीब 10 से 11 बजे के बीच घर से बिना बताए कहीं चली गई। परिजनों ने आसपास और रिश्तेदारों के यहां काफी तलाश की, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिला। परिजनों को संदेह था कि किसी अज्ञात व्यक्ति ने उसे बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया है।

इस पर पुलिस ने अपराध क्रमांक 15/2025 धारा 137(2) बीएनएस के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की। विवेचना के दौरान पीड़िता अपने परिजनों के साथ थाने पहुंची, जहां महिला अधिकारी ने उससे पूछताछ कर बयान दर्ज किया। पीड़िता के कथन से चौंकाने वाला खुलासा हुआ। उसने बताया कि सोनतरा निवासी 19 वर्षीय शत्रुहन करायेत ने वर्ष 2024 में पहली बार उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए थे। इसके बाद 25 जून 2025 को वह उसे बहला-फुसलाकर घर से भगाकर अपने साथ पुणे और विशाखापट्टनम ले गया, जहां कई बार उसके साथ दुष्कर्म किया।

मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धारा 87, 64(2)(एम), 65(1) बीएनएस और 4(2) पॉक्सो एक्ट की धाराएं जोड़ दीं। पुलिस ने आरोपी की पतासाजी करते हुए 6 मार्च 2026 को उसे गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद आरोपी शत्रुहन करायेत पिता नरेश करायेत उम्र 19 वर्ष साकिन सोनतरा थाना तरेगांव जंगल जिला कबीरधाम को विधिवत गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है। पुलिस का कहना है कि मामले में अन्य गवाहों के बयान और विवेचना की कार्रवाई अभी जारी है।

हंगामा कर रहे तीन युवक पुलिस के हत्थे चढ़े

राजनांदगांव। शहर में बेवजह विवाद कर माहौल बिगाड़ने की कोशिश कर रहे तीन युवकों पर लालबाग थाना पुलिस ने सख्त कार्रवाई की है। पुलिस ने तीनों को पकड़कर शांति भंग करने के आरोप में गिरफ्तार किया और उनके खिलाफ प्रतिबंधात्मक कार्रवाई करते हुए न्यायालय में पेश किया। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार पुलिस अधीक्षक सुश्री अंकिता शर्मा के निर्देशन, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कीर्तन राठौर के मार्गदर्शन और नगर पुलिस अधीक्षक वैशाली जैन के पर्यवेक्षण में क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए लगातार अभियान चलाया जा रहा है।

इसी क्रम में 7 मार्च को लालबाग थाना पुलिस को सूचना मिली कि नया ढाबा क्षेत्र में कुछ युवक लोगों से अनावश्यक विवाद कर माहौल खराब कर रहे हैं। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और तीनों युवकों को पकड़ लिया। पूछताछ में उनकी पहचान मनीष कुमार साहू (21 वर्ष) पिता घनश्याम साहू, लालचंद यादव (23 वर्ष) पिता पवन यादव और देवेश यादव (22 वर्ष) पिता दिनेश यादव, सभी निवासी नया ढाबा थाना लालबाग, जिला राजनांदगांव के रूप में हुई। पुलिस ने पाया कि तीनों युवक लोगों से बेवजह वाद-विवाद कर क्षेत्र में शांति व्यवस्था भंग कर रहे थे और किसी संज्ञेय अपराध की आशंका भी बनी हुई थी। इसके बाद पुलिस ने तीनों को धारा 170 बीएनएसएस के तहत गिरफ्तार कर पृथक से धारा 126 और 135(3) बीएनएसएस के तहत कार्रवाई करते हुए इस्तगासा तैयार कर माननीय न्यायालय राजनांदगांव में पेश किया।

भारत के जीत का जश्न मनाते खेल प्रेमी

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

भारत माता चौक में टी ट्वेंटी विश्वकप जीतने के बाद क्रिकेट प्रेमियों ने पटाखे फोड़कर व मिठाई बांटकर जश्न मनाया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं को आगे बढ़ने का दिया गया संदेश, महतारी वंदन योजना से मिल रही आर्थिक मजबूती

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा गांधी सभागृह राजनांदगांव में महतारी सम्मेलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व सांसद अभिषेक सिंह उपस्थित थे। इस दौरान पूर्व उपाध्यक्ष बीस सूत्रीय क्रियान्वयन समिति खूबचंद पारख, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सुश्री सुरूचि सिंह एवं अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे। कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित किया गया।

पूर्व सांसद अभिषेक सिंह ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई सभी महिलाओं को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। श्री सिंह ने कहा कि महिलाएं अब केवल पुरूषों के बराबर ही नहीं, बल्कि उनसे भी आगे बढ़ने की क्षमता रखती हैं। उन्होंने कहा कि महिलाएं स्वभाव से बहुत धैयर्वान होती हैं और परिवार को संभालते हुए सभी को साथ लेकर चलने की अद्भुत क्षमता रखती हैं। उन्होंने कहा कि समाज और परिवार की मजबूती में महिलाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। आज महिलाएं शिक्षा, रोजगार और विभिन्न क्षेत्रों में लगातार आगे बढ़ रही हैं और अपनी प्रतिभा से नई पहचान बना रही हैं। उन्होंने कहा कि महतारी वंदन योजना के माध्यम से महिलाओं को प्रतिमाह आर्थिक सहायता मिल रही है, जिससे वे आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। उन्होंने योजना की राशि प्राप्त करने वाली सभी महिलाओं को बधाई देते हुए कहा कि यह पहल महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

पूर्व उपाध्यक्ष बीस सूत्रीय क्रियान्वयन समिति खूबचंद पारख ने कहा कि इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की मुख्य थीम [illegible] है। उन्होंने यदि हम अपने कौशल, ज्ञान और समय को साझा कर महिलाओं को सहयोग दें, तो इससे पूरे समाज और मानवता को लाभ होता है। उन्होंने कहा कि महिलाओं की प्रतिभा को निखारने, उन्हें आगे बढ़ने और देश-प्रदेश के नेतृत्व के लिए प्रेरित करना भी ज्ञान के दान का एक रूप है। उन्होंने कहा कि पहले भारत को पुरूष प्रधान समाज के रूप में देखा जाता था, जहां महिलाओं को कई बार उपेक्षित माना जाता था। लेकिन वतर्मान समय में महिलाएं हर क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रही हैं।

उन्होंने कहा कि आने वाले समय में महिलाएं केवल घर और रसोई तक सीमित नहीं रहेंगी, बल्कि विभिन्न कार्यालयों और नेतृत्व के पदों पर भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी। उन्होंने बताया कि राज्य शासन द्वारा महतारी वंदन योजना से महिलाओं को प्रतिमाह एक हजार रूपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। इसके माध्यम से महिलाओं की आर्थिक स्थिति मजबूत होने के साथ ही परिवार के पोषण और बच्चों के स्वास्थ्य में भी सुधार हो रहा है। शासन द्वारा कुपोषण को समाप्त करने और बच्चों को सुपोषित बनाने के लिए विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि राज्य शासन द्वारा बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। छात्राओं को साइकिल उपलब्ध कराने का उद्देश्य उन्हें स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहित करना है, ताकि वे शिक्षा प्राप्त कर अपनी प्रतिभा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचा सकें। पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी ने महिला सशक्तिकरण के लिए कई महत्वपूर्ण अभियान शुरू किए थे और वर्तमान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के माध्यम से समाज में बेटियों के प्रति सकारात्मक सोच विकसित हुई है और भ्रूण हत्या जैसी कुप्रथा में कमी आई है।

सीईओ सुश्री सुरूचि सिंह ने कहा कि महतारी वंदन योजना के तहत महिलाओं को प्रतिमाह एक हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है। उन्होंने महिलाओं से पूछा कि उन्हें महतारी वंदन योजना के तहत कितनी राशि मिलती है, तो उपस्थित महिलाओं ने उत्साहपूर्वक बताया कि उन्हें हर महीने एक हजार रूपए प्राप्त हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि महिलाओं के पास तीन चीजें नहीं होनी चाहिए अशिक्षा, अस्वच्छता और कुपोषित बच्चा। उन्होंने कहा कि सबसे पहले शिक्षा का महत्व समझना जरूरी है।

महिलाओं को स्वयं जितना भी पढ़ा-लिखा हो, उसका अभ्यास करते रहना चाहिए और अपने बेटा-बेटी दोनों को समान रूप से शिक्षा दिलानी चाहिए। उन्होंने कहा कि आजकल कई क्षेत्रों में लड़कियां टॉपर बन रही हैं, इसलिए उन्हें आगे बढ़ने के लिए बेहतर अवसर देना जरूरी है। उन्होंने स्वच्छता पर भी विशेष जोर देते हुए कहा कि शौचालय और साफ-सफाई महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि महिलाएं केवल अपने परिवार तक सीमित नहीं हैं, बल्कि समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। आंगनबाड़ी, पालक चौपाल और समूह बैठकों के माध्यम से महिलाओं को स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता फैलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने कहा कि किसी भी परिवार में कुपोषित बच्चा नहीं होना चाहिए।

उन्होंने बताया कि माताओं की जिम्मेदारी होती है कि वे बच्चों के पोषण पर विशेष ध्यान दें। इसके लिए तिरंगा भोजन की अवधारणा को अपनाने की सलाह दी गई, जिसमें थाली में तीन रंगों के पोषक आहार शामिल किए जाते हैं, ताकि बच्चों को संतुलित पोषण मिल सके। उन्होंने कहा कि महतारी वंदन योजना से मिलने वाली एक हजार रूपए की राशि का उपयोग महिलाओं को सोच-समझकर करना चाहिए। यह राशि केवल खर्च करने के लिए नहीं, बल्कि परिवार के विकास के लिए एक छोटी पूंजी है। उन्होंने महिलाओं से अपील की कि वे इस राशि का उपयोग शिक्षा, स्वच्छता और पोषण जैसी आवश्यकताओं में करें, जिससे परिवार, गांव और पूरे समाज का विकास सुनिश्चित हो सके।

कार्यक्रम को अध्यक्ष जनपद पंचायत श्रीमती प्रतिमा चंद्राकर, जिला पंचायत सदस्य श्रीमती देव कुमार साहू, जिला पंचायत सदस्य श्रीमती शीला सिन्हा, उपाध्यक्ष जनपद पंचायत श्रीमती अनिता सिन्हा, पार्षद शिव वर्मा ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर जनपद पंचायत सदस्य सांकेत साहू, कोमल सिंह राजपूत, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास श्रीमती गुरूप्रीत कौर सहित बड़ी संख्या में विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाली महिलाएं उपस्थित थी।

'सर्विस ऑन व्हील्स' अभियान बना जनसेवा की मिसाल, हजारों दिव्यांगजन व वृद्धजन लाभान्वित

नई दृष्टिबिंदु / मोहला

जिले में समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित 18 दिवसीय 'सर्विस ऑन व्हील्स-दिव्यांगजन एवं वृद्धजन सेवा रथ' अभियान ने दूरस्थ एवं ग्रामीण अंचलों में शासकीय सेवाओं की प्रभावी पहुँच सुनिश्चित करते हुए जनसेवा की मिसाल कायम की। अभियान के अंतर्गत जिले के तीनों विकासखंड—मानपुर, मोहला एवं अंबागढ़ चौकी—में क्लस्टर स्तरीय शिविरों और सेवा रथ के माध्यम से ग्राम-ग्राम पहुँचकर दिव्यांगजनों एवं वृद्धजनों को उनके घर के समीप विभिन्न योजनाओं का लाभ प्रदान किया गया। सीमावर्ती एवं अंतिम छोर के गांवों तक प्रशासन की सीधी पहुँच इस अभियान की प्रमुख उपलब्धि रही।

अभियान के दौरान सेवा रथ के माध्यम से 337 डीएलसी, भौतिक सत्यापन, 209 मृत्यु प्रविष्टि, 39 पलायन प्रविष्टि तथा 245 आधार सीडिंग की कार्यवाही पूर्ण की गई। वहीं वय वंदन योजना अंतर्गत 56 पंजीयन किए गए और 72 आयुष्मान कार्डों का निर्माण एवं वितरण किया गया। सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देने हेतु 14 स्थानों पर नशा मुक्ति शपथ कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। पात्र हितग्राहियों को 2 बैटरी ट्राइसाइकिल, 21 ट्राइसाइकिल, 17 व्हीलचेयर, 175 वॉकिंग स्टिक, 35 श्रवण यंत्र, 12 बैसाखी, 8 वॉकर, 8 कमर/घुटना बेल्ट, 8 डिजिटल/सेंसर स्टिक, 3 कृत्रिम पैर/कृत्रिम अंग तथा 1 मानसिक दिव्यांगजन हेतु विशेष टीएलएम किट का वितरण किया गया, जिससे उनके दैनिक जीवन को सुगम बनाने में मदद मिली।

इसके अतिरिक्त 21 दिव्यांगजनों से कौशल प्रशिक्षण हेतु आवेदन तथा 9 हितग्राहियों से यूडीआईडी कार्ड के लिए आवेदन प्राप्त किए गए। ग्राम स्तर पर सेवाएँ उपलब्ध होने से उन दिव्यांगजनों एवं वृद्धजनों को विशेष राहत मिली, जिनके लिए शासकीय कार्यालयों तक पहुँचना कठिन था। जिला प्रशासन के 'अंतिम व्यक्ति तक सेवा पहुँचाने' की पहल में अधिकारी-कर्मचारी, दिव्यांग मितान, जनप्रतिनिधि एवं मैदानी अमले की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

शिक्षकों को परीक्षा से ठीक पहले 5 दिवसीय प्रशिक्षण टीचर्स एसोसिएशन ने तत्काल स्थगित करने की मांग

नई दृष्टिबिंदु / कबीरधाम

कबीरधाम जिले में वार्षिक परीक्षा से ठीक पहले शिक्षकों का प्रशिक्षण आयोजित किए जाने को लेकर छत्तीसगढ़ टीचर्स एसोसिएशन ने नाराजगी जताई है। एसोसिएशन ने जिला शिक्षा अधिकारी को पंडरिया ब्लॉक में चल रहे पांच दिवसीय प्रशिक्षण को तत्काल स्थगित करने की मांग की है। संगठन का कहना है कि परीक्षा से पहले छात्रों की तैयारी के लिए शिक्षकों का स्कूल में रहना जरूरी है, ऐसे में प्रशिक्षण का समय उचित नहीं है।

टीचर्स एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष डॉ. रमेश कुमार चन्द्रवंशी ने बताया कि लोक शिक्षण संचालनालय रायपुर के निर्देशानुसार 17 मार्च से कक्षा आठवीं की वार्षिक परीक्षा शुरू होने वाली है। इसके बावजूद पंडरिया ब्लॉक में सामाजिक विज्ञान और विज्ञान विषय के 111 शिक्षकों का पांच से नौ मार्च तक पांच दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है। इससे विद्यार्थियों की परीक्षा तैयारी प्रभावित होने की आशंका है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा वतर्मान सत्र 2025-26 में मुख्यमंत्री शिक्षा गुणवत्ता अभियान चलाया जा रहा है, लेकिन परीक्षा के ठीक पहले प्रशिक्षण आयोजित करना इस अभियान की मंशा पर सवाल खड़े करता है। संगठन ने स्पष्ट किया कि उन्हें शिक्षक प्रशिक्षण से कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन प्रशिक्षण के समय को लेकर गंभीर आपत्ति है।

एसोसिएशन ने सवाल उठाया कि जब शिक्षा सत्र की शुरुआत 16 जून से होती है तो जुलाई से जनवरी के बीच प्रशिक्षण क्यों नहीं कराया गया। लगभग सत्र समाप्ति और वार्षिक परीक्षा से पहले प्रशिक्षण आयोजित करने को लेकर संगठन ने प्रशासन से जवाब मांगा है। प्रदेश के लोक शिक्षण संचालनालय ने 17 मार्च से कक्षा आठवीं की वार्षिक परीक्षा शुरू करने का कार्यक्रम तय किया है। वहीं मिडिल स्कूलों में छठवीं और सातवीं की स्थानीय परीक्षाएं 25 मार्च से 10 अप्रैल तक आयोजित की जानी हैं। ऐसे में मिडिल स्कूल शिक्षकों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण कई सवाल खड़े करता है। टीचर्स एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने सुझाव दिया है कि शिक्षक प्रशिक्षण के लिए जुलाई से जनवरी का समय उपयुक्त होता है। इसलिए प्रशिक्षण को नए शिक्षा सत्र 2026-27 में आयोजित किया जाना चाहिए।

ग्रीष्म ऋतु में आवश्यक तैयारियों के साथ पेयजल व्यवस्था करें सुनिश्चित : कलेक्टर

नई दृष्टिबिंदु / मोहला

कलेक्टर तुलिका प्रजापति ने कलेक्टोरेट सभाकक्ष में आयोजित समय-सीमा बैठक में जिले के विभिन्न विभागों द्वारा संचालित योजनाओं एवं विकास कार्यों की विभागवार विस्तृत समीक्षा की। बैठक में सीईओ जिला पंचायत भारती चंद्राकर, अपर कलेक्टर जी.आर. मरकाम, अपर कलेक्टर मिथलेश डोंडे, एसडीएम मोहला हेमेंद्र भुआर्य, एसडीएम मानपुर अमित नाथ योगी सहित सभी विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

नगर पंचायत अंबागढ़ चौकी अंतर्गत कार्यों की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) की प्रगति की जानकारी ली। लक्ष्य, पूणर्ता एवं पात्रता परीक्षण की समीक्षा करते हुए आवास निर्माण कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए। इसी प्रकार स्वच्छ भारत मिशन, प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना, विश्वकर्मा योजना तथा जल आवर्धन योजना की समीक्षा की। ग्रीष्म ऋतु को ध्यान में रखते हुए उन्होंने सभी संबंधित विभागों को आवश्यक तैयारियों के साथ पेयजल व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। आदिवासी विकास विभाग की समीक्षा के दौरान वन अधिकार पत्र वितरण की स्थिति की जानकारी ली गई। छात्रावास एवं आश्रमों के निरीक्षण की समीक्षा करते हुए जिला एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को निर्धारित तिथियों में निरीक्षण कर जानकारी प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए। मौके पर छात्रवृत्ति वितरण की समीक्षा के साथ एकलव्य विद्यालय की प्रगति की जानकारी लेते हुए विद्युत विभाग को अतिशीघ्र विद्युत व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने संबंधित विभागीय अधिकारी को स्वीकृत निर्माण कार्यों में तेजी लाकर शीघ्र पूर्ण करने को भी कहा।

आयुष विभाग की समीक्षा में ओपीडी, राष्ट्रीय आयुष कार्यक्रम तथा जिला एवं विकासखंड स्तरीय आयुष शिविरों की प्रगति की जानकारी ली। सहकारिता विभाग की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने निर्देश दिए कि जिन ग्राम पंचायतों में पैक्स समिति का गठन नहीं हुआ है, उन्हें चिन्हांकित कर संबंधित विभागीय अधिकारी समन्वय के साथ समिति गठन हेतु काययीजना तैयार करें, ताकि शेष ग्राम पंचायतों में भी शीघ्र समिति गठित की जा सके। कलेक्टर प्रजापति ने ई-ऑफिस की समीक्षा की। आभा आईडी की प्रगति की समीक्षा करते हुए स्वास्थ्य एवं महिला एवं बाल विकास विभाग को कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए। आधार आईडी निर्माण एवं वेरिफिकेशन की धीमी प्रगति पर नाराजगी व्यक्त करते हुए प्राप्त सूची के अनुसार शिविर आयोजित कर सत्यापन कार्य अति शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए।

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग की समीक्षा के दौरान जल जीवन मिशन के कार्यों की प्रगति की जानकारी ली गई। बंद कार्यों की सूची प्रस्तुत कर आवश्यक कारर्वाई सुनिश्चित करने को कहा। पेयजल विहीन आंगनबाड़ी, स्कूल एवं स्वास्थ्य केंद्रों में पेयजल व्यवस्था की समीक्षा करते हुए कार्यों का सत्यापन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। साथ ही पेयजल व्यवस्था हेतु ठोस काययीजना बनाकर सभी तैयारियां पूर्ण करने को कहा। ग्रामीण यांत्रिकी सेवा एवं पीडब्ल्यूडी विभाग को स्वीकृत निर्माण कार्यों में प्रगति लाने के निर्देश दिए गए। खाद्य विभाग की समीक्षा के दौरान धान उठाव, खाद्यान्न भंडारण एवं चावल उत्सव की जानकारी ली।

बाघ ने मोहला-मानपुर में मचाया उत्पात, मवेशियों को बनाया निवाला

नई दृष्टिबिंदु / मोहला-मानपुर

जिला अंतर्गत छत्तीसगढ़-महाराष्ट्र सीमा में बाघ का आतंक एक बार फिर सामने आया है। बीते फरवरी से अब तक एक माह के भीतर एक ग्रामीण समेत दो मवेशियों को मौत के घाट उतार चुके बाघ की इस बार औंधी तहसील क्षेत्र अंतर्गत बागडोंगरी ग्राम पंचायत क्षेत्र में आमद हुई, जहां 6 मार्च को दिन-दहाड़े बाघ ने आतंक मचाया और मवेशियों पर हमला किया। वहीं 6 और 7 मार्च की दरमियानी रात बाघ इंसानी बस्ती में पहुंच गया, जिससे ऐसे खौफनाक हालात बन गए कि ग्रामीणों को पेड़ पर चढ़कर अपनी जान बचानी पड़ी।

बता दें, मानपुर दक्षिण वन परिक्षेत्र अंतर्गत औंधी क्षेत्र के बागडोंगरी गांव निवासी ग्रामीण का बैल, जो गांव के आसपास चर रहा था, उस पर बाघ ने हमला कर दिया। जैसे-तैसे बाघ के चंगुल से छूटकर बैल अपने पालक के घर पहुंचा तो पता चला कि बैल के शरीर में बाघ के पंजों की खरोंचें हैं और बाघ के दांतों ने भी बैल की गर्दन में छेद कर दिए हैं।

यही नहीं, बाघ ने इसी बागडोंगरी ग्राम पंचायत के आश्रित मोहल्ले मरकाटोला में भी आतंक मचाया, जहां खेत में भुट्टे की फसल की रखवाली के लिए घूम रहे दो ग्रामीणों को इस बाघ ने दौड़ाया। हालांकि ये ग्रामीण फुर्ती से एक पेड़ पर चढ़ गए, जिससे वे बाघ के हमले से बच गए, लेकिन जिस पेड़ पर ये ग्रामीण चढ़े, उसके इर्द-गिर्द ही बाघ मंडराते हुए ग्रामीणों पर हमले की फिराक में जुटा रहा। तब जाकर टॉर्च की रोशनी और ग्रामीणों की आहट से घबराकर बाघ मौके से भागा और पेड़ पर चढ़े ग्रामीण सुरक्षित नीचे उतर सके।

शिमला की खूबसूरती के बीच खास पल: मेयर सुरेंद्र चौहान से मिली नई दृष्टि बिंदु की टीम

मॉल रोड पर मुलाकात और शहर की झलक : मेयर ने कराया शिमला के विकास कार्यों का निरीक्षण

शिमला से संदीप सिंह

हिमाचल प्रदेश की खूबसूरत वादियों में इन दिनों अवकाश का आनंद ले रहे 'नई दृष्टिबिंदु' परिवार के सदस्यों के लिए शिमला का दौरा यादगार बन गया, जब उनकी मुलाकात सुरेंद्र चौहान से हो गई। यह मुलाकात शिमला के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल मॉल रोड पर उस समय हुई, जब 'नई दृष्टिबिंदु' परिवार के सदस्य सुबह के समय वहां के प्राकृतिक और मनमोहक दृश्य का आनंद ले रहे थे। इस दौरान मेयर सुरेंद्र चौहान के साथ उमा कौशल भी मौजूद थीं। दोनों जनप्रतिनिधियों ने नई दृष्टि बिंदु परिवार के सदस्यों का आत्मीय स्वागत किया और मॉल रोड क्षेत्र का निरीक्षण कराते हुए यहां चल रहे विकास कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

स्वच्छ व व्यवस्थित शिमला की झलक

भ्रमण के दौरान मेयर सुरेंद्र चौहान ने बताया कि शिमला को स्वच्छ, सुंदर और पर्यटकों के लिए अधिक आकर्षक बनाने के लिए नगर निगम लगातार प्रयास कर रहा है। उन्होंने कहा कि देशभर से बड़ी संख्या में पर्यटक यहां आते हैं, इसलिए नगर निगम की कोशिश रहती है कि शहर की स्वच्छता, सौंदर्य और मूलभूत सुविधाओं को बेहतर बनाया जाए। 'नई दृष्टिबिंदु' परिवार के सदस्यों ने भी मॉल रोड की स्वच्छता और सुव्यवस्थित निर्माण की सराहना की। हिमालय की वादियों के बीच बसे इस क्षेत्र का शांत वातावरण और सुंदर दृश्य सभी के लिए सुखद अनुभव साबित हुआ।

शिमला नगर निगम का नेतृत्व

गौरतलब है कि सुरेंद्र चौहान 15 मई 2023 से शिमला नगर निगम के मेयर पद पर कार्यरत हैं। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़े हुए हैं और वार्ड नंबर 28 छोटा शिमला का प्रतिनिधित्व करते हैं। वहीं उमा कौशल वार्ड नंबर 10 टूटीकंडी से डिप्टी मेयर हैं। हाल ही में मेयर चौहान ने नगर निगम के लिए वित्तीय वर्ष 2026-27 का लगभग 688 करोड़ रुपये का बजट भी प्रस्तुत किया है।

अटल परिसर का भी कराया भ्रमण

इस दौरान मेयर सुरेंद्र चौहान ने 'नई दृष्टिबिंदु' परिवार को अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमा का भी दर्शन कराया, जिसे 'अटल परिसर' के नाम से विकसित किया गया है। यह स्थान शिमला आने वाले पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण बन चुका है।

भिलाई आने का दिया निमंत्रण

भ्रमण के दौरान 'नई दृष्टिबिंदु' परिवार के सदस्यों ने मेयर को भिलाई स्टील प्लांट के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी और उन्हें भिलाई आने का निमंत्रण दिया। मेयर सुरेंद्र चौहान ने इस निमंत्रण को सहर्ष स्वीकार करते हुए भविष्य में भिलाई आने का आश्वासन दिया।

टूर बना यादगार

'नई दृष्टिबिंदु' परिवार के सदस्यों—संदीप सिंह, संजय उपाध्याय, प्रमोद पांडे, राहुल भटघरे, संतोष सिंह, विजय सिंह, मनोज तिवारी, वशिष्ठ प्रजापति और जे.आर. पाणिग्रही—ने इस मुलाकात को अपने शिमला प्रवास का एक विशेष और यादगार क्षण बताया। उन्होंने मेयर के साथ खींची गई तस्वीरें भी साझा करते हुए बताया कि हिमाचल प्रदेश की प्राकृतिक सुंदरता, स्वच्छ वातावरण और यहां के लोगों की आत्मीयता ने इस यात्रा को और भी सुखद बना दिया।

महिला दिवस का दिन कुछ अलग था

डॉ. सोनाली चक्रवर्ती

भिलाई। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर उन मेहनतकश महिलाओं को सम्मानित होते देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जो दूसरों के घरों में कार्य कर अपने परिवार का पालन-पोषण करती हैं, परंतु जिनके संघर्ष और समर्पण को अक्सर समाज में वह पहचान नहीं मिल पाती जिसकी वे वास्तविक हकदार हैं। ऐसे ही लगभग 22,000 श्रमशील एवं संघर्षशील महिलाओं को सम्मान प्रदान करते हुए उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने के उद्देश्य से वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन की शक्ति योजना की शुरुआत की गई। इस योजना के माध्यम से इन बहनों के स्वास्थ्य, शिक्षा, बच्चों की पढ़ाई, बेटियों के विवाह तथा अन्य आवश्यक सामाजिक-आवश्यकताओं में सहयोग प्रदान किया जाएगा। मेरा विश्वास है कि यह पहल इन परिवारों को सशक्त बनाने और उनके जीवन स्तर को बेहतर करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी।

इस अवसर पर हमारी टीम Swayamsiddha A Mission 'स्वयंसिद्धा नाट्य दल' की ओर से मेरे द्वारा लिखित एवं निर्देशित एक नाटक प्रस्तुत किया गया जिसमे उन महिलाओं के जीवन के संघर्ष,समस्या व पीड़ा को दिखाने का प्रयत्न किया हमने। उन बहनों ने हमारे नाटक को सराहा उसमें अपने रोजमर्रा के जीवन की झलक देखी यही हमारी नाटक की सार्थकता थी। विधायक रिकेश सेन एवं ऋचा सेन ने हमारे सभी कलाकारों को वूमेंस डे पर सम्मानित किया ।

सहकारिता प्रकोष्ठ में डॉ . गीता सिंह को प्रदेश कोषाध्यक्ष की बड़ी जिम्मेदारी

बिलासपुर। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव और संगठन मंत्री पवन साय के मार्गदर्शन तथा सहकारिता प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक प्रवीण कुमार दुबे द्वारा बिलासपुर की समाजसेवी डॉ. गीता सिंह को सहकारिता प्रकोष्ठ में प्रदेश कोषाध्यक्ष की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। उनकी इस नियुक्ति से संगठन के कार्यकर्ताओं और महिलाओं में खुशी की लहर देखी जा रही है।

डॉ. गीता सिंह लंबे समय से सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रही हैं और महिलाओं के सशक्तिकरण, स्व-सहायता समूहों तथा सामाजिक कार्यों में लगातार योगदान देती रही हैं। उनकी सक्रियता और संगठनात्मक क्षमता को देखते हुए पार्टी ने उन्हें यह अहम जिम्मेदारी दी है। उनकी नियुक्ति की खबर मिलते ही मध्यान्ह भोजन रसोइया कल्याण संघ और बिहान से जुड़ी महिलाओं में भारी हर्ष व्याप्त हो गया। रसोइया कल्याण संघ की जिलाध्यक्ष संतोषी कौशिक ने कहा कि डॉ. गीता सिंह को यह जिम्मेदारी मिलने से संगठन को मजबूती मिलेगी और महिलाओं की आवाज को प्रदेश स्तर तक मजबूती से उठाने का अवसर मिलेगा। इस दौरान कृष्णा कंवर, शांति बाई, अन्नपूर्णा चांपा, लक्ष्मी महंत, सुनीता मिरी कोरबा, विनोद खांडे बिलासपुर, गायत्री साहूकांकेर और रूखमणी पांडे सिवनी सहित बिहान की टीम लीडरों ने भी डॉ. गीता सिंह को बधाई देते हुए खुशी जाहिर की। डॉ. गीता सिंह अपने अनुभव और समर्पण के साथ संगठन को मजबूत करने और सहकारिता से जुड़े कार्यों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी।

चन्द्रनाहू कुर्मी क्षत्रिय समाज के अधिवेशन में शामिल हुए मुख्यमंत्री

समाज के लिए सामुदायिक भवन के लिए 50 लाख और पारागांव में सीसी रोड निर्माण के लिए 20 लाख रुपये देने की घोषणा

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

जब समाज स्वयं अपने बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी लेता है, तब नई पीढ़ी और अधिक आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ती है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने रायपुर जिले के पारागांव में आयोजित चन्द्रनाहू कुर्मी क्षत्रिय समाज के दो दिवसीय वार्षिक अधिवेशन को संबोधित करते हुए यह बात कही। इस अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण घोषणाएं करते हुए सामुदायिक भवन निर्माण के लिए 50 लाख रुपये देने की घोषणा की। साथ ही पारागांव में सीसी रोड निर्माण के लिए 20 लाख रुपये की स्वीकृति प्रदान की।

मुख्यमंत्री श्री साय ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर उपस्थित सभी माताओं-बहनों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज महतारी वंदन योजना को दो वर्ष पूर्ण हो गए हैं और इस अवसर पर प्रदेश की लगभग 70 लाख महिलाओं के खातों में योजना की 25वीं किश्त की राशि अंतरित की गई है। उन्होंने कहा कि यह योजना महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि चन्द्रनाहू कुर्मी क्षत्रिय समाज का गौरवशाली इतिहास रहा है और इस समाज ने देश और प्रदेश को अनेक प्रतिभाशाली व्यक्तित्व दिए हैं। उन्होंने समाज द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि समाज के माध्यम से 2000 से अधिक विद्यार्थियों को शिक्षा का अवसर मिल रहा है, जो अत्यंत सराहनीय है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि राज्य सरकार गरीब और जरूरतमंद परिवारों को पक्के मकान उपलब्ध कराने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि छत्तीसगढ़ को देश का धान का कटोरा कहा जाता है और किसानों के हित में राज्य सरकार लगातार निर्णय ले रही है। उन्होंने कहा कि होली पर्व के पूर्व 25.28 लाख किसानों के खातों में कृषक उन्नति योजना के अंतर्गत 10 हजार 324 करोड़ रुपये की राशि अंतरित की गई है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि रामलला दर्शन योजना के माध्यम से पिछले दो वर्षों में 42 हजार से अधिक श्रद्धालु अयोध्या जाकर भगवान श्रीराम के दर्शन कर चुके हैं। इसके साथ ही मुख्यमंत्री तीर्थ यात्रा योजना को भी पुनः प्रारंभ किया गया है, जिससे बुजुर्गों और श्रद्धालुओं को विभिन्न तीर्थस्थलों के दर्शन का अवसर मिल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2026 के बजट में राज्य के सभी वर्गों के विकास को ध्यान में रखते हुए प्रावधान किए गए हैं। उन्होंने समाज के युवाओं से आग्रह किया कि जो बेटा-बेटी उद्यम करना चाहते हैं, वे राज्य की नई उद्योग नीति का अध्ययन करें। मुख्यमंत्री ने बताया कि छत्तीसगढ़ को लगभग 8 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं और इन निवेश प्रस्तावों को जमीन पर उतारने की दिशा में कार्य प्रारंभ हो चुका है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट उपलब्धि प्राप्त करने वाले प्रतिभावान व्यक्तियों को सम्मानित किया। सम्मानित होने वालों में दीपक चंद्राकर (सिविल जज में चयनित), कु. लक्ष्मी चंद्राकर (पीएससी में चयनित, वाणिज्यिक कर अधिकारी), डॉ. प्रीति करण चंद्राकर (हेड ऑफ डिपार्टमेंट, कंप्यूटर एंड साइंस, एनआईटी रायपुर), डॉ. करण चंद्राकर (आईआईटी दिल्ली से टेक्सटाइल एवं फाइबर इंजीनियरिंग में पीएचडी), कु. लक्ष्मी चंद्राकर (इंडो-नेपाल टेस्ट सीरीज बॉल बैडमिंटन में गोल्ड मेडल), डॉ. दिव्या चंद्राकर एवं डॉ. राहुल चंद्राकर (एमबीबीएस, शासकीय चिकित्सालय महासमुंद) शामिल हैं। कार्यक्रम को केबिनेट मंत्री गुरु खुशवंत साहेब, विधायक ललित चंद्राकर तथा विधायक योगेश्वर राजू सिन्हा ने भी संबोधित किया और समाज के संगठन, शिक्षा और सामाजिक विकास में योगदान की सराहना की। इस अवसर पर समाज के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि तथा बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर रक्तदान व स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर लीनेस क्लब भिलाई वीरंगना द्वारा आशीर्वाद रक्त बैंक के सहयोग से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर के दौरान व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक रक्तदान कर मानव सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर आरोगयम अस्पताल, भिलाई द्वारा एक मेगा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का शुभारंभ किया गया, जिसमें लोगों के ब्लड शुगर और बीपी की जांच की गई तथा उन्हें स्वास्थ्य के प्रति आरोगयम के डॉक्टर द्वारा जागरूक किया गया।

आयोजन में गुरुद्वारा नानकसर चैरिटेबल पॉलीक्लिनिक भिलाई ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और सभी संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए शिविर के सफल संचालन में सहयोग प्रदान किया। इस अवसर पर लाइनेस क्लब की अध्यक्ष रोजेलिना सिंह अपनी टीम के साथ सुबह 11 बजे से शाम 5 बजे तक लगातार उपस्थित रहीं। गुरुद्वारा नानकसर नेहरू नगर के अध्यक्ष हरमिंदर सिंह सैनी ने अमरीक सिंह दोसांझ के साथ पूरे कार्यक्रम का संचालन किया।

भ्रष्टाचार के आरोपी रहे लाखोटिया बंधुओं को 'सेल' में करें प्रतिबंधित आरपी शर्मा ने सेल निदेशक प्रभारी चित्तरंजन महापात्रा से की मांग

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

आचार्य नरेंद्र देव स्मृति जन अधिकार अभियान समिति ने भिलाई इस्पात संयंत्र में स्क्रैप रिकवरी की टेंडर प्रक्रिया में भ्रष्टाचार के आरोपी रहे लाखोटिया बंधुओं को शामिल किए जाने पर आपत्ति जताई है। समिति के अध्यक्ष आर पी शर्मा ने भिलाई स्टील प्लांट के निदेशक प्रभारी चित्तरंजन महापात्रा को भेजे पत्र में बिंदुवार जानकारी देते हुए मांग की है कि लाखोटिया बंधुओं को सेल-बीएसपी में प्रतिबंधित किया जाए।

जन अधिकार अभियान समिति ने स्क्रैप रिकवरी के टेंडर में लाखोटिया बंधुओं की फर्म को शामिल किए जाने पर जताई आपत्ति

अपने पत्र में श्री शर्मा ने कहा कि 2011-12 में भिलाई इस्पात संयंत्र में भ्रष्टाचार के मामले में झारखंड के कथित प्रभावशाली ठेकेदार पवन कुमार लाखोटिया और लाखोटिया की फर्म संदेह के दायरे में रही है। विगत तीन दशक से एमबीएल इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड के निदेशक पवन कुमार लाखोटिया और इंटरनेशनल कॉमर्स लिमिटेड के प्रबंध निदेशक श्रीकुमार लाखोटिया की 11 कंपनियां सेल में रजिस्टर्ड हैं। इन कंपनियों के माध्यम से लाखोटिया बंधु बड़े पैमाने पर अनियमितता करते चले आ रहे हैं।

श्री शर्मा ने अपने पत्र में कहा है कि पवन कुमार लाखोटिया खुद तत्कालीन सांसद ताराचंद साहू को रिश्वत देने के मामले में आरोपी रहे हैं। इसके बावजूद वर्तमान में स्क्रैप रिकवरी का टेंडर जारी किया गया है जिसमें हमें जानकारी मिली है कि इस पूरी टेंडर प्रक्रिया में लाखोटिया और उनकी फार्म ने खुलकर भागीदारी की है। दस्तावेजों के मुताबिक PR Number 1130029869/29 अगस्त 2025 के अनुरूप लाखोटिया की फर्म को करोड़ों का काम दिया गया है।

उन्होंने कहा कि एक सजग नागरिक होने के नाते इस पूरी प्रक्रिया पर उनकी तरफ से आपत्ति है। इसकी वजह यह है कि उक्त कांट्रेक्टर पर सेल-बीएसपी के अधिकारियों और सांसद को घूस देने का आरोप रहा है। इसके बावजूद उक्त फर्म को पुनः टेंडर में शामिल कर इस अनियमितता और भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है। उन्होंने मांग की है कि समूची टेंडर प्रक्रिया को तत्काल निरस्त की जाए और देखी जा रही अनियमितताओं का भी निराकरण किया जाए। इसके उपरांत पारदर्शिता के साथ नया टेंडर जारी किया जाए।

श्री शर्मा ने अपने पत्र में कहा है कि लाखोटिया बंधु जैसे अपराधिक तत्वों को इन प्रक्रिया से बाहर रखा जाए अन्यथा यहां के कुछ अफसर और कांट्रेक्टर लाखोटिया बंधु जैसे लोग मिलकर भिलाई इस्पात संयंत्र को खोखला कर देंगे। बेहतर होगा कि फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड अधिग्रहित करने वाली जापानी फर्म से ही स्क्रैप रिकवरी का कार्य लिया जाए। जिससे बीएसपी के कामकाज में पारदर्शिता बनीं रहे।

महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए लगातार कार्य कर रही है-मंत्री यादव

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आज महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा सतनाम भवन कसारीडीह में महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के तैलचित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में स्कूल शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में महिला एवं बाल विकास समिति की प्रभारी श्रीमती शशि साहू उपस्थित रहीं।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर स्कूल शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने प्रदेश की सभी महिलाओं को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही महिलाओं को विशेष सम्मान दिया जाता रहा है। हमारी सनातन परंपरा में भी भगवानों के साथ माता का नाम पहले लिया जाता है, जो समाज में नारी के महत्व को दर्शाता है। मंत्री श्री यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए लगातार कार्य कर रही है। इसी कड़ी में महतारी वंदन योजना के तहत जिले की लगभग 52 हजार महिलाओं को प्रतिमाह एक हजार रुपये की सहायता राशि प्रदान की जा रही है। उन्होंने बताया कि आज मुख्यमंत्री बस्तर जिले से इस योजना की राशि का अंतरण करेंगे, जो प्रदेश के लिए गर्व की बात है।

मंत्री श्री यादव ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा नारी दुर्गावती योजना भी प्रारंभ की गई है। इस योजना के अंतर्गत बेटियों को उनके जन्म के समय ही जोड़ा जाएगा और 18 वर्ष की आयु पूरी होने पर उन्हें डेढ़ लाख रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी, जिससे उनके भविष्य को मजबूत आधार मिल सके। उन्होंने बताया कि प्रदेश में लगभग 70 लाख महिलाओं के खातों में महतारी वंदन योजना के तहत हर महीने एक हजार रुपये की राशि सीधे जमा की जा रही है। मंत्री श्री यादव ने कहा कि महिलाओं और बेटियों को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सशक्त बनाने के लिए सरकार अनेक योजनाएं संचालित कर रही है। समाज के हर क्षेत्र में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। आंगनबाड़ी संचालन, बच्चों की देखभाल और परिवार तथा समाज के विकास में महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने सभी महिलाओं को बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि आज सरकार द्वारा महिलाओं के हित में अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं, जिनका लाभ लेकर महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त और आत्मनिर्भर बन रही हैं। महापौर ने कहा कि वर्तमान समय में महिलाएं समाज के हर क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। परिवार के स्वास्थ्य और देखभाल में महिलाओं की भूमिका अत्यंत अहम होती है। उन्होंने कहा कि महिलाएं परिवार की सेहत की मजबूत आधारशिला हैं। महिलाएं परिवार की सबसे महत्वपूर्ण इकाई हैं और उनके सशक्त होने से ही समाज और राष्ट्र का समग्र विकास संभव है।

कलेक्टर अभिजीत सिंह ने कहा कि महिलाओं की भूमिका हर क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि भारतीय समाज, संस्कृति और परंपरा में महिलाओं को सदैव सम्मान दिया गया है, जो दुनिया के कई अन्य देशों में देखने को नहीं मिलता। कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि भारत उन देशों में शामिल है जहां महिलाओं को लोकतांत्रिक अधिकारों के साथ मतदान का अधिकार भी मिला है। उन्होंने बताया कि आजादी के समय देश में साक्षरता दर काफी कम थी, लेकिन आज शिक्षा के प्रसार के साथ साक्षरता कई गुना बढ़ चुकी है, जिसमें महिलाओं की भागीदारी भी लगातार बढ़ रही है। महतारी वंदन योजना महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। कलेक्टर श्री सिंह ने कहा कि केन्द्र सरकार और राज्य सरकार दोनों ही महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित कर रही हैं। सरकार का प्रयास है कि समाज की हर महिला चाहे वह छोटी बच्ची हो, युवा महिला हो या वृद्ध महिला सभी को योजनाओं का लाभ मिले और वे आत्मनिर्भर बन सकें। इस दौरान उन्होंने एक श्लोक कहा-'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः' जहां नारी का सम्मान होता है, वहां देवताओं का वास होता है।

इस दौरान महिला स्व सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं ने अपने-अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि सरकारी योजनाओं से उन्हें आत्मनिर्भर बनने और अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने में सहायता मिली है। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने वाली महिलाओं को सम्मानित भी किया गया और विभिन्न महिला स्व सहायता समूहों को चेक भी वितरित किए गए। इस अवसर पर जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी आरके जाम्बुलकर, जिला कार्यक्रम अधिकारी अजय साहू सहित विभागीय अधिकारी, पार्षद व जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित थीं।

बाइक से गिरकर घायल शिक्षिका की इलाज के दौरान हुई मौत

नई दृष्टिबिंदु / खैरागढ़

नगर के दाऊचौरा लल्ला चाल निवासी शिक्षिका मर्सी बचइया (48 वर्ष), जो शनिवार सुबह एक दर्दनाक हादसे का शिकार हुई थीं। आखिरकार जिंदगी की जंग हार गईं और रायपुर एम्स (अक्क्टर) में उपचार के दौरान उन्होंने अंतिम सांस ली और उनकी मौत हो गई। इस खबर के बाद शिक्षा जगत और स्थानीय क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई है।

जानकारी के अनुसार, मर्सी बचइया अमलीपारा स्थित वेसलियन इंग्लिश मीडियम स्कूल में शिक्षिका थीं। शनिवार सुबह करीब 8:45 बजे वे अपने पुत्र के साथ बाइक पर सवार होकर स्कूल जा रही थीं। इसी दौरान किल्लापारा के पास उनकी साड़ी का पल्लू अचानक बाइक के पिछले पहिये में फंस गया। झटके के साथ वे सड़क पर सिर के बल गिर पड़ीं, जिससे उनके सिर में गंभीर चोट आई थी।

हादसे के बाद उन्हें तत्काल जिला अस्पताल खैरागढ़ ले जाया गया था, जहाँ से उन्हें राजनांदगांव और फिर दुर्ग के निजी अस्पताल रेफर किया गया। स्थिति में सुधार न होते देख परिजनों ने उन्हें रायपुर एम्स में भर्ती कराया था। डॉक्टरों के तमाम प्रयासों के बावजूद उनकी गंभीर चोटों के कारण उन्हें बचाया नहीं जा सका।

शिक्षिका मर्सी बचइया अपने मृदुभाषी व्यवहार और अध्यापन शैली के लिए जानी जाती थीं। उनके निधन पर स्कूल प्रबंधन और उनके छात्रों ने गहरा दुख व्यक्त किया है। पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंपने की प्रक्रिया शुरू कर दी है।

पीआरजीआई सं.-CTHIN/25/A3746 यह हिंदी सांध्य दैनिक समाचार पत्र नई दृष्टिबिंद स्वामी एवं प्रकाशक आलोक तिवारी द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 से मुद्रित करवा कर। 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से प्रकाशित संपादक आलोक तिवारी मो. 7415469100 (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार), समस्त विवादों का निपटारण न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।